साईं

सृजन पटल

Website : www.sainsrijanpatal.com

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

मासिक ई-पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-2 | अंक-15 | अक्टूबर - 2025 | पृष्ठ-28 | निःशुल्क

Prof.Harshwanti Bisht, Ph.D.
Principal, Govt.P.G. College,
Uttarkashi (Retd.)
President, Indian Mountaineering Fondation 2021-23

Arjuna Award 1981
Edmund Hillary Legacy Medal 2013
E-mail : harshvanti@gmail.com
Website : http://savegangotri.prayaga.org
Contact : 91-9412026580

संदेश

'साईं सृजन पटल' एक सुंदर कलेवर में सुसज्जित ऐसी ई–पत्रिका है,जिसमें उत्तराखंड के भूत में घटित,वर्तमान में संचालित तथा मंगल भविष्य हेतु सुझावों से परिपूर्ण ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं राजनीतिक घटनाओं, योजनाओं, सूचनाओं एवं उदाहरणों से परिपूर्ण रचनाओं का समावेश होता है। इस तथ्यपरक,कलात्मक एवं सृजनात्मक ई–पत्रिका को मुख्य संपादक प्रो.के. एल.तलवाड़ जी जिस प्रकार से प्रतिमाह सुधि पाठकों तक पहुंचाते हैं,यह अपने आप में महत्वपूर्ण एवं दिलचस्प है।

मैं इस पत्रिका की उत्तरोत्तर समृद्धि एवं विश्वव्यापी संचालन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

शुभेच्छु,

(प्रो.हर्षवन्ती बिष्ट)

755 A, Indira Nagar, P.O. New Forest, Dehradun - 248006, India

सम्पादकीय

पन्द्रह महीने यानि सवा साल की निर्बाध संपादकीय यात्रा के बाद 'साईं सृजन पटल– का 15 वां अंक सुधि पाठकों के सम्मुख है। पत्रिका की पाठ्य सामग्री का शुभारंभ त्रिवेणी घाट ऋषिकेश की विश्वप्रसिद्ध गंगा आरती से हुआ है। त्योहारों के क्रम में अल्मोड़ा के दशहरे, इगास बग्वाल, ऐपण और रानीगढ़ मंदिर पर भी लेख संकलित हैं। त्योहारों की मिठास के बीच तरल शक्कर में छिपे खतरों के प्रति सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ.बृजमोहन शर्मा जी ने आगाह भी किया है। अम्रदा डेयरी की संचालिका उर्वशी उनियाल की उद्यमी के रूप में सफलता की कहानी भी महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। जहां एक ओर सुधीर तिवारी जी पर्यावरण संवर्धन की अलख जगा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आईआईटी रुड़की के विद्यार्थियों का इस दिशा में नवाचार सराहनीय है। स्व० श्रीमती सुदेश मल्होत्रा जी का नेत्रदान अनुकरणीय है।

उत्तराखंड के साहित्यकार पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी जी को 'पारस शिखर सम्मान', महावीर रंवाल्टा को राष्ट्रीय सम्मान, रघुवीर लाल को कानपुर पुलिस कमिश्नर का दायित्व और बेटी एंजेल का केबीसी टीवी शो में शानदार प्रदर्शन मान बढ़ाने वाले समाचार हैं। इसके अलावा वाइब्रेंट विलेज जादूंग,दून पुस्तकालय और शोध केंद्र, दृष्टि दिव्यांगजनों की सृजनशीलता,पुस्तक समीक्षा और कर्णप्रयाग कालेज की सराहनीय पहल–निःशुल्क पुस्तक वितरण मेला पर भी विशेष सामग्री पत्रिका का हिस्सा बनी है। उत्तराखंड सरकार द्वारा मेधावी बालिकाओं को स्मार्ट फोन वितरण और वृद्धजनों की सेवा के कार्यक्रम प्रशंसनीय हैं। अर्जुन अवार्ड से सम्मानित पर्यावरणविद डॉ. हर्षवंती बिष्ट को गोपेश्वर चमोली में 'केदार सिंह रावत पर्यावरणीय पुरस्कार' मिलना उनके पर्यावरण प्रेम से जुड़े धरातलीय कार्यों को सही मायनों में रेखांकित करता है। उनके द्वारा 'साईं सृजन पटल' को प्रेषित संदेश से पूरी संपादकीय टीम का मनोबल बढ़ा है। प्रयास रहेगा की पत्रिका सदैव अपनी प्रतिबद्धता को सच्ची लगन से आगे बढ़ाती रहे।

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

साईं
सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक

प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो.- 9412142822
ई-मेल: sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक

अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक

अमन तलवाड़
मो. 7300883189

द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साई कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ. मंजू कोगियाल, असि. प्रो. हिन्दी
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण साहित्यकार

आवरण पृष्ठ

आवरण पृष्ठ– श्री गंगा आरती ऋषिकेश, फोटो – कु.शानवी भट्ट (रुद्रप्रयाग), इन्सेट में – उद्यमी श्रीमती उर्वशी उनियाल एवं अल्मोड़ा के दशहरे की झांकी।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

त्रिवेणी घाट की गंगा आरती : आध्यात्म और भक्ति की स्वर लहरी

देवभूमि उत्तराखंड में स्थित ऋषिकेश वह पवित्र नगरी है, जहां हिमालय की गोद से उतरकर मां गंगा जनमानस के जीवन में शुद्धता और शांति का संचार करती है। 'ऋषिकेश' नाम ही दर्शाता है कि यह स्थली ऋषियों, तपस्वियों और साधकों की तपोभूमि रही है। यहां के प्रत्येक घाट पर आध्यात्म की सुगंध और भक्ति का स्वर गूंजता है। इन सभी में त्रिवेणी घाट सबसे प्रमुख है जहां, प्रतीकात्मक रूप में गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियों का संगम माना जाता है। इसी त्रिवेणी तट पर प्रतिदिन संध्या के समय होने वाली गंगा आरती ऋषिकेश की आत्मा कही जा सकती है। त्रिवेणी घाट का उल्लेख प्राचीन ग्रंथो में मुक्तिक्षेत्र के रूप में मिलता है। कहा जाता है कि यह वह स्थान है, जहां भगवान श्री कृष्ण ने अपने अंतिम समय में गंगा स्नान किया था। इसी स्थल पर अनेक ऋषियों ने तप किया, जिनमें कण्व ,व्यास और विश्वामित्र जैसे महर्षि प्रमुख हैं। त्रिवेणी घाट पर स्नान करना और गंगा आरती में सम्मिलित होना मोक्षदायक माना गया है। श्रद्धालु सुबह स्नान कर गंगा तट पर दीपदान करते हैं और संध्या को आरती में भाग लेकर अपने जीवन में अलौकिक पवित्रता का अनुभव करते हैं। त्रिवेणी घाट पर होने वाली गंगा आरती एक ऐसा अनुभव है जो श्रद्धालुओं को मंत्र मुग्ध करता है और आरती के दौरान दीप जलाकर व मंत्रों के उच्चारण के साथ मां गंगा की पूजा की जाती है। यह आरती न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि इसकी सुंदरता और भव्यता भी अद्वितीय है। त्रिवेणी घाट पर प्रतिदिन होने वाली गंगा आरती का आरंभ 1985 से स्थानीय संतों और श्रद्धालुओं के सामूहिक प्रयासों से हुआ।

आरती व्यवस्थापक श्री जतन स्वरूप भटनागर के अनुसार बाद में इसे व्यवस्थित रूप देने के लिए त्रिवेणी घाट गंगा सेवा समिति का गठन किया गया जो कि वर्ष 2014 तक अनवरत रूप से कार्य करती आ रही है। वर्ष 2015 से वाराणसी की तर्ज पर होने वाली गंगा आरती की तरह यहां पर भी गंगा आरती के लिए गंगा सभा का गठन किया गया, जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर शर्मा थे। सामान्य तौर पर अध्यक्ष एवं महामंत्री का कार्यकाल दो वर्ष का होता है। गंगा सभा एक स्वायत्तशासी संस्था है, जिसे सरकार या अन्य कहीं से कोई आर्थिक मदद नहीं मिलती है। श्रद्धालु स्वयं दान स्वरूप भेंट करते हैं। वर्तमान में गंगा सभा के अध्यक्ष श्री जगमोहन सकलानी एवं महामंत्री श्री राहुल शर्मा हैं। गंगा सभा समिति के पुरोहित और संत समय–समय पर स्वच्छता अभियान और गंगा संरक्षण का संदेश भी आरती के माध्यम से जनमानस तक पहुंचाते हैं। गंगा आरती के समय पुजारी और आरतीकार मां गंगा की पूजा करते हैं। वह गंगा नदी के समक्ष दीपक जलाते हैं और मां गंगा की महिमा की स्तुति करते हैं। आरती के दौरान श्रद्धालु भी मां गंगा की पूजा और आराधना करते हैं । गंगा आरती का समय सामान्य तौर पर मार्च माह से सितंबर माह तक 6:30 बजे सायं से 7:15 तक एवं अक्टूबर माह से फरवरी माह तक 5:30 बजे सायं से 6:15 बजे तक या सूर्यास्त के अनुसार 45 मिनट का समय निर्धारित किया जाता है। लगभग 15 आरतियों का सेट संगीतमय आरती के माध्यम से हजारों सनातनियों एवं विदेशी श्रद्धालुओं की उपस्थिति में आरती को भव्यता एवं दिव्यता प्रदान करता है। आरती में सम्मिलित होने वाले पांच हजार श्रद्धालुओं के लिए बैठने व खड़े होने की क्षमता का टिनशेड गंगा सभा द्वारा बनाया गया है। ऋषिकेश त्रिवेणी घाट की गंगा आरती अब केवल स्थानीय धार्मिक आयोजन नहीं रही बल्कि यह वैश्विक सांस्कृतिक प्रतीक बन चुकी है।

विश्व के विभिन्न देशों से आने वाले श्रद्धालु,पर्यटक और योग साधक इस आरती में सम्मिलित होकर भारतीय आध्यात्मिकता की अनुभूति करते हैं। यह आरती भारतीय संस्कृति के उस मूल दर्शन को दर्शाती है जिसमें नदी, पर्वत, वृक्ष ,वायु सभी पूज्यनीय हैं और गंगा केवल जलधारा ही नहीं बल्कि जीवन ज्ञान और करुणा की प्रतीक है।

प्रस्तुति–
डॉ. हरीश चंद्र रतूड़ी ,
विभागाध्यक्ष वाणिज्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग,(चमोली)

अलर्ट

तरल शक्कर में छिपे खतरे
बेहतर स्वास्थ्य के लिए जागरूकता जरूरी

एक ऐसी दुनिया में जहाँ सुविधा अक्सर सजगता पर भारी पड़ जाती है, वहाँ मीठे प्रलोभनों में फँसना बहुत आसान हो जाता है बिना यह जाने कि उस स्वाद के पीछे क्या छिपा है लेकिन हर निवाला जो हम खाते हैं, वह सिर्फ स्वाद का नहीं, बल्कि हमारे दीर्घकालिक स्वास्थ्य और परिवार के भविष्य का भी एक चुनाव है। तरल शक्कर (Liquid Sugar) के छिपे खतरों को समझकर और उसे पहचानना सीखकर, हम अपने भोजन पर दोबारा नियंत्रण पा सकते हैं, अपनी परंपराओं का सम्मान कर सकते हैं और ऐसी मिठास चुन सकते हैं जो वास्तव में पोषण देती है। बेहतर स्वास्थ्य की राह जागरूकता से शुरू होती है – और यह यात्रा अभी शुरू हो रही है।

मीठा या नुकसान ?

आज के बदलते खाद्य संसार में तरल चीनी एक मौन लेकिन प्रभावशाली खतरे के रूप में उभरी है। यह हमारे खान–पान में चुपचाप घुस चुकी है सॉफ्ट ड्रिंक्स, जूस, मिठाई, बिस्कुट, जैम, सॉस आदि के रूप में।

जो कभी एक दुर्लभ, प्रयोगशाला में बनी चीज थी, अब वह औद्योगिक खाद्य पदार्थों का प्रमुख घटक बन चुकी है क्योंकि यह सस्ती है, ज्यादा मीठी है और निर्माण प्रक्रिया में उपयोगी साबित होती है।

दानेदार चीनी को घोलना पड़ता है, लेकिन तरल शक्कर पहले से ही टूटे हुए रूप में होती है जो शरीर द्वारा तुरंत अवशोषित हो जाती है। इस अति–प्रसंस्कृत (Ultra & Processed) प्रकृति के कारण यह आसानी से व्यंजनों में मिल जाती है, बनावट और चमक बढ़ाती है और शेल्फ लाइफ लंबी करती है। लेकिन यह सुविधा स्वास्थ्य की कीमत पर आती है।

तरल चीनी का इतिहास

1960 के दशक में अमेरिका में हाई फ्रुक्टोज कॉर्न सिरप (HFCS) का विकास हुआ गन्ने की चीनी का सस्ता विकल्प।

कॉर्न स्टार्च से बना यह सिरप एंजाइम द्वारा फ्रुक्टोज और ग्लूकोज में बदला जाता है। इसकी लंबी शेल्फ लाइफ और अधिक मिठास के कारण इसने पेय और खाद्य उद्योग में पारंपरिक चीनी की जगह ले ली। भारत ने भी आने वाले दशकों में इसका अनुसरण किया। लिक्विड ग्लूकोज और इनवर्टेड शुगर सिरप को अपनी मिठाइयों, बेकरी और पेय पदार्थों में शामिल कर लिया। इससे न केवल हमारे खाने का तरीका बदला, बल्कि हमारा भोजन खुद बदल गया।

तरल चीनी के प्रकार

1. **हाई फ्रुक्टोज कॉर्न सिरप (HFCS) :**
कॉर्न स्टार्च से बना, अत्यधिक मीठा सिरप। कोल्ड ड्रिंक, कैंडी, कैन्ड फ्रूट्स, केचप और फ्लेवर्ड मिल्क में आम है।

2. **लिक्विड ग्लूकोज :**
कॉर्न या गेहूं के स्टार्च से बना गाढ़ा सिरप। हलवा, बर्फी, लड्डू, आइसक्रीम और बेकरी फिलिंग्स में प्रयोग।

3. **इनवर्टेड शुगर सिरप :**
सुक्रोज को तोड़कर ग्लूकोज और फ्रुक्टोज में बदला जाता है। गुलाब जामुन, रसगुल्ला, जैम और डेयरी मिठाइयों में चमक और नमी बनाए रखने के लिए उपयोग।

4. **एगावे नेक्टर, औद्योगिक शहद और मेपल सिरप :**
'प्राकृतिक' कहे जाने के बावजूद, बड़े पैमाने पर प्रसंस्करण इन्हें HFCS जितना हानिकारक बना देता है। इन सभी में एक समानता है। ये तेजी से पचते हैं, लेकिन पोषक नहीं हैं।

स्वास्थ्य पर प्रभाव

तरल चीनी सिर्फ मोटापा ही नहीं बढ़ाती, बल्कि इंसुलिन स्पाइक (रक्त शर्करा का अचानक बढ़ना),लिवर में फैट जमना,टाइप–2 डायबिटीज,और नॉन–अल्कोहॉलिक फैटी लिवर डिजीज (NAFLD) जैसे रोगों का कारण बनती है। फ्रुक्टोज प्रधान सिरप सीधे लिवर तक पहुँचते हैं, जहाँ वे वसा

(फैट) में बदल जाते हैं और समय के साथ सूजन और नुकसान पैदा करते हैं। इसके अलावा, ये भूख नियंत्रित करने वाले हार्मोन (Leptin और Ghrelin) को गड़बड़ा देते हैं। जिससे व्यक्ति को पेट भरा हुआ महसूस नहीं होता और वह ज्यादा खा लेता है।

भारतीय मिठाइयों में घुसपैठ

तरल शक्कर अब हमारे पारंपरिक मिठाइयों में भी जगह बना चुकी है।

ये मिठाइयाँ ज्यादा नरम, चमकदार और टिकाऊ लगती हैं , पर वास्तव में इनमें उच्च ग्लाइसेमिक इंडेक्स और कम पोषण मूल्य होता है। इसके विपरीत, गुड़ या अपरिष्कृत चीनी से बनी मिठाइयाँ जल्दी सूख जाती हैं, लेकिन शरीर के लिए बेहतर होती हैं। तरल शक्कर दाँतों के लिए भी हानिकारक है। यह दाँतों पर चिपककर बैक्टीरिया को बढ़ावा देती है, जिससे कैविटी और सड़न होती है साथ ही, यह LDL कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स बढ़ाकर दिल की बीमारियों का जोखिम बढ़ाती है।

कैसे पहचानें छिपी हुई चीनी

1. अत्यधिक चमक या चिपचिपापन : मिठाई में तरल शक्कर का संकेत।
2. लंबे समय तक न सख्त होना : शेल्फ लाइफ अस्वाभाविक रूप से लंबी।
3. फ्रीजर टेस्ट : फ्रीजर में रखने पर अगर मिठाई पूरी तरह नहीं जमे, तो उसमें HFCS या ग्लूकोज सिरप है।
4. गर्म पानी में घोलना : अगर पानी धुंधला और चिपचिपा हो जाए, तो उसमें सिरपी तत्व हैं।

उपभोक्ताओं के लिए चेतावनी

खाद्य नमूनों की प्रयोगशाला जांच में, मैंने बार–बार HFCS और ग्लूकोज सिरप की उपस्थिति पाई है – यहाँ तक कि स्थानीय मिठाइयों में भी। अक्सर यह लेबल पर लिखा नहीं होता, जिससे सामान्य उपभोक्ता धोखा खा जाता है।

यहाँ तक कि धार्मिक उपवास के समय खाई जाने वाली मिठाइयों में भी ये सिरप मिलाए जाते हैं। जो उपवास के असली उद्देश्य को विफल करते हैं। बच्चों के लिए यह और भी खतरनाक है। कम शरीर द्रव्यमान और विकसित होते अंगों के कारण, इन पर असर कई गुना ज्यादा होता है।

स्वस्थ विकल्प

1. **गुड़ (Jaggery) :** आयरन और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर, ऊर्जा धीरे–धीरे प्रदान करता है।
2. **देशी खांड और मिश्री :** प्राकृतिक गन्ने के करीब और कम प्रसंस्कृत।
3. **स्टीविया :** पौधों से प्राप्त, शून्य कैलोरी मीठा।
4. **खजूर, अंजीर, केला पेस्ट :** प्राकृतिक मिठास के साथ फाइबर और खनिज भी देते हैं।
5. **कच्चा शहद (Raw Honey) :** सीमित मात्रा में ही लें,अधिक नहीं।

निष्कर्ष

हमारी संस्कृति में मिठाई सिर्फ भोजन नहीं, बल्कि प्यार, परंपरा और उत्सव का प्रतीक है। इसलिए पूर्ण रूप से त्यागना यथार्थवादी नहीं है, परंतु सजग उपभोग, लेबल पढ़ने की आदत और पारंपरिक विधियों से बनी मिठाइयाँ अपनाना समय की आवश्यकता है। स्कूल स्तर से पोषण शिक्षा, सख्त लेबलिंग कानून और जन–जागरूकता ही इस छिपे खतरे को रोक सकते हैं। हमने सुविधा, स्वाद और टिकाऊपन की दौड़ में अपने स्वास्थ्य को दाँव पर लगा दिया है। अब समय है कि हम जागरूकता, परंपरा और विज्ञान के माध्यम से नियंत्रण वापस लें।

छोटे–छोटे बदलाव : जैसे गुड़ वाली मिठाई चुनना, प्रसंस्कृत पेयों से बचना या लेबल पढ़ना हमारे दीर्घकालिक स्वास्थ्य में बड़ा अंतर ला सकते हैं।

आइए, मिठास आनंद से आए : जोखिम से नहीं।

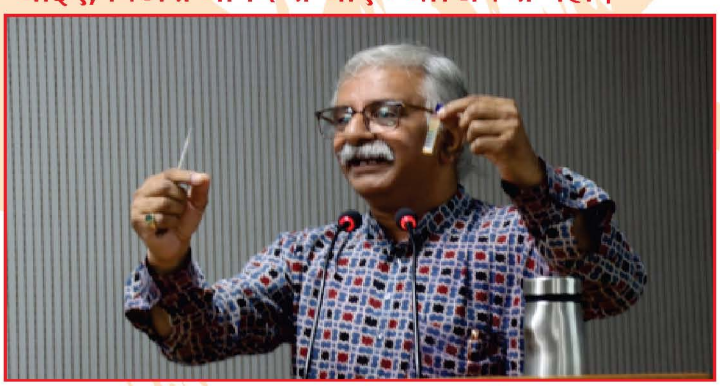

प्रस्तुति – डॉ. बृज मोहन शर्मा

(लेखक एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त रसायनज्ञ हैं और 1990 से खाद्य गुणवत्ता एवं मिलावट अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रहे हैं।)

आईआईटी रुड़की की नई पहल – पर्यावरण संकट और प्लास्टिक प्रदूषण का स्थायी समाधान

हमारे देश में बढ़ते प्रदूषण, खासकर प्लास्टिक से होने वाली क्षति, एक गंभीर समस्या बन चुकी है। इस संकट के समाधान के लिए सरकारी प्रयासों के साथ–साथ शोध संस्थानों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। हमारी धरती पर पर्यावरणीय संकट के जटिल मुद्दे दिन–ब–दिन बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में तकनीकी विकास और नवाचारों का योगदान बेहद महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रुड़की ने एक ऐसी क्रांतिकारी पहल की है, जो न केवल प्लास्टिक के बढ़ते संकट को कम करने में मदद कर सकती है, बल्कि किसानों को भी आर्थिक लाभ दे सकती है।

उत्तराखंड स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रुड़की ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक नया कदम उठाया है, जिसने न केवल प्लास्टिक प्रदूषण को नियंत्रित करने की दिशा में योगदान दिया है, बल्कि कृषि अपशिष्ट पराली की समस्या का भी स्थायी समाधान प्रस्तुत किया है। इस पहल के तहत, आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों ने गेहूं के भूसे और मिट्टी से बनाए गए पर्यावरण अनुकूल बर्तनों और प्लेट्स का विकास किया है।

पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नवाचार

आईआईटी रुड़की की इनोपैप लैब (Innovation in Paper & Packaging Lab) द्वारा विकसित यह नई तकनीक, गेहूं के भूसे को ढालकर बायोडिग्रेडेबल, कम्पोस्टेबल और टिकाऊ प्लेट्स एवं बर्तनों में बदलती है। यह बर्तनों का निर्माण 'मिट्टी से मिट्टी तक' के दर्शन के अनुरूप है, जो पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल हैं और उपयोग के बाद आसानी से मिट्टी में मिल जाते हैं। इससे सिंगल यूज प्लास्टिक के बढ़ते संकट को काबू किया जा सकता है, साथ ही खेतों में जलाए जाने वाले पराली के कारण होने वाले प्रदूषण को भी रोका जा सकता है।

सिंगल यूज प्लास्टिक की समस्या आज हमारे समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। खासकर शादी–ब्याह जैसे आयोजनों में डिस्पोजेबल बर्तनों का उपयोग पर्यावरण के लिए हानिकारक साबित हो रहा है। इसके अतिरिक्त, गेहूं की फसल के बाद बचने वाली पराली को जलाने की आदत से वायु प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। आईआईटी रुड़की के इस नवाचार से इन दोनों समस्याओं का समाधान हो सकता है। इससे एक ओर जहां पर्यावरण का संरक्षण होगा, वहीं दूसरी ओर किसानों को भी उनके पराली से अतिरिक्त आय का स्रोत प्राप्त होगा।

कृषि अपशिष्ट से उत्पाद निर्माण : एक नया मार्ग

भारत में हर साल लगभग 35 करोड़ टन कृषि पराली का उत्पादन होता है, जिसका अधिकांश हिस्सा जलाया जाता है। इस प्रक्रिया से वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों ने इस पराली का उपयोग कर, उसे पर्यावरण अनुकूल उत्पादों में

बदल दिया है। यह नवाचार, विशेष रूप से किसानों के लिए एक नया आर्थिक अवसर प्रस्तुत करता है, क्योंकि उन्हें अब अपने कृषि अपशिष्ट को जलाने के बजाय एक उपयोगी उत्पाद में बदलने का मौका मिल सकता है।

प्रो. विभोर के. रस्तोगी, जो इस प्रोजेक्ट के नेतृत्वकर्ता हैं, ने इस तकनीकी प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि यह पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल है और इससे किसी भी प्रकार का प्रदूषण उत्पन्न नहीं होगा। इस नवाचार से प्लास्टिक के विकल्प के रूप में यह बर्तन सस्ते, टिकाऊ और कम्पोस्टेबल होंगे, जो एक नये, स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य की दिशा में एक कदम है।

युवाओं की प्रेरणा और योगदान

इस प्रोजेक्ट में जैस्मीन कौर और डॉ. राहुल रंजन जैसे युवा शोधकर्ताओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने मोल्डेड टेबलवेयर (ढाले हुए बर्तन) के डिजाइन और विकास में अपना योगदान दिया। उनके मुताबिक, यह पहल यह दिखाती है कि युवा शोधकर्ता समाज के लिए स्थायी और टिकाऊ समाधान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस परियोजना का उदाहरण यह भी है कि कैसे युवा अपनी तकनीकी कौशल से पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं।

स्वच्छ भारत और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मील का पत्थर

आईआईटी रुड़की का यह नवाचार न केवल स्वच्छ भारत मिशन और आत्मनिर्भर भारत अभियान के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के प्रति भी भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। विशेष रूप से एसडीजी–12 (जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन) और एसडीजी–13(जलवायु कार्रवाई) के लक्ष्यों की प्राप्ति में यह पहल मील का पत्थर साबित हो सकती है।

आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत ने इस पहल को लेकर कहा कि यह नवाचार इस बात का उदाहरण है कि शोध संस्थान समाज की वास्तविक समस्याओं पर काम कर रहे हैं और उनके समाधान की दिशा में कदम उठा रहे हैं। यह परियोजना न केवल प्लास्टिक प्रदूषण को कम करेगी, बल्कि किसानों के लिए नए आय के अवसर भी उत्पन्न करेगी।

आगे की दिशा और सामूहिक प्रयास

यह पहला अवसर नहीं है जब आईआईटी रुड़की के वैज्ञानिकों ने पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई हो। इससे पहले, उन्होंने बाजरे की पराली से स्ट्रॉ बनाने का काम भी किया था, जो स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए

लाभकारी था। इस नई पहल से यह स्पष्ट हो गया है कि तकनीकी नवाचार और समाज के लिए स्थायी समाधान ढूंढने का कार्य निरंतर जारी है। अब यह समय है कि हम सब मिलकर इस नवाचार को स्वीकार करें और इसे व्यापक स्तर पर लागू करें, ताकि आने वाले समय में हमारे पर्यावरण को बचाया जा सके और साथ ही किसानों के लिए नए आर्थिक अवसर सृजित हो सकें।

नवाचार के जरिये पर्यावरण की रक्षा आईआईटी रुड़की का यह नवाचार न सिर्फ एक तकनीकी सफलता है, बल्कि यह समाज और पर्यावरण के लिए एक बड़ा उपहार साबित हो सकता है। गेहूं के भूसे से बनाए गए बर्तन और प्लेट्स के माध्यम से यह पहल यह सिद्ध करती है कि अगर हम अपनी कृषि प्रौद्योगिकी और विज्ञान का सही दिशा में इस्तेमाल करें, तो हम न केवल पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं, बल्कि समाज के सभी वर्गों के लिए एक स्थायी और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं। आईआईटी रुड़की का यह कदम पर्यावरणीय स्थिरता और स्वच्छ भारत मिशन के लिए एक प्रेरणा है और देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर है।

प्रस्तुति-अंकित तिवारी,
उप सम्पादक

इगास बग्वाल : माधो सिंह भंडारी की वीरता का उत्सव

माधो सिंह भंडारी 17 वीं शताब्दी में गढ़वाल के प्रसिद्ध भड़ (योद्धा) हुए। माधो सिंह मलेथा गांव के थे। तब श्रीनगर गढ़वाल के राजाओं की राजधानी थी।माधो सिंह भड़ परंपरा से थे। उनके पिता कालो भंडारी की बहुत ख्याति हुई। माधो सिंह, पहले राजा महीपत शाह, फिर रानी कर्णावती और फिर पृथ्वीपति शाह के वजीर और वर्षों तक सेनानायक भी रहे। एक गढ़वाली लोकगाथा गीत (पंवाड़ा) देखिए –

''सैणा सिरीनगर रैंदू राजा महीपत शाही
महीपत शाह राजान भंडारी सिरीनगर बुलायो.........'' तब गढ़वाल और तिब्बत के बीच अक्सर युद्ध हुआ करते थे। दापा के सरदार गर्मियों में दर्रों से उतरकर गढ़वाल के ऊपरी भाग में लूटपाट करते थे। माधो सिंह भंडारी ने तिब्बत के सरदारों से दो या तीन युद्ध लड़े। सीमाओं का निर्धारण किया। सीमा पर भंडारी के बनवाए कुछ मुनारे (स्तंभ) आज भी चीन सीमा पर मौजूद हैं। माधो सिंह ने पश्चिमी सीमा पर हिमाचल प्रदेश की ओर भी एक

बार युद्ध लड़ा। एक बार तिब्बत युद्ध में वे इतने उलझ गए कि दिवाली के समय तक वापस श्रीनगर गढ़वाल नहीं पहुंच पाए। आशंका थी कि कहीं युद्ध में मारे न गए हों। तब दिवाली नहीं मनाई गई। दिवाली के कुछ दिन बाद माधो सिंह की युद्ध विजय और सुरक्षित होने की खबर श्रीनगर गढ़वाल पहुंची। तब राजा की सहमति पर एकादशी के दिन दिवाली मनाने की घोषणा हुई। तब से इगास बग्वाल निरंतर मनाई जाती है। गढ़वाल में यह लोकपर्व बन गया। हालांकि कुछ गांवों में फिर से अमावस्या की दिवाली ही रह गई और कुछ में दोनों ही मनाई जाती रही। इगास बिल्कुल दीवाली की तरह ही मनाई जाती है। घर की सजावट, उड़द के पकोड़े, दियों की रोशनी, भैला और मंडाण ..... शायद यह 1630 के आसपास की बात है। इन्हीं माधो सिंह भंडारी ने 1634 के आसपास मलेथा की प्रसिद्ध भूमिगत सिंचाई नहर बनाई, जिसमें उनके पुत्र का बलिदान हुआ। जीवन के उत्तरार्द्ध में उन्होंने तिब्बत से ही एक और युद्ध लड़ा, जिसमें उन्हें वीरगति प्राप्त हुई। इतिहास के अलावा भी अनेक लोकगाथा गीतों में माधो सिंह की शौर्य गाथा गाई जाती है। इगास दिवाली पर उन्हें याद किया जाता है –

दाळ दळीं रैगे माधो सिंह
चौंल छड्यां रैगे माधो सिंह
बार ऐन बग्वाळी माधो सिंह
सोला ऐन शराद माधो सिंह
मेरो माधो निं आई माधो सिंह
तेरी राणी बोराणी माधो सिंह ....

वीरगाथा गीतों में उनके पिता कालो भंडारी, पत्नियां रुक्मा और उदीना तथा पुत्र गजे सिंह और अमर सिंह का भी उल्लेख आता है। मलेथा में नहर निर्माण, संभवत पहाड़ की पहली भूमिगत सिंचाई नहर पर भी लोक गाथा गीत हैं।

रुक्मा का उलाहना –

''योछ भंडारी क्या तेरू मलेथा
जख सैणा पुंगड़ा बिनपाणी रगड़ा ....''

और जब नहर बन जाती है तब –

भंडारी रुक्मा से कहता है –

''ऐ जाणू रुक्मा मेरा मलेथा
गौं मुंड को सेरो मेरा मलेथा ....''

बहुत विस्तृत है माधो सिंह भंडारी की इतिहास शौर्य गाथा और लोकगाथा भी। उनकी मृत्यु शायद 1664 – 65 के बाद हुई। इंद्रमणि बडोनी जी के निर्देशन में माधो सिंह भंडारी से सम्बन्धित गाथा गीतों को 1970 के दशक में संकलित करके नृत्य नाटिका में ढाला गया था। एक डेढ़ दशक तक दर्जनों मंचन हुए। स्वर और ताल देने वाले लोक साधक 85 वर्षीय शिवजनी अब भी टिहरी के ढुंग बजियाल गांव में रहते हैं ....

लोग इगास तो मनाते रहे लेकिन इसका इतिहास और इसकी गाथा भूलते चले गए। आधा गढ़वाल भूल गया, जबकि आधे गढ़वाल में अब भी बड़े उत्साह से इगास मनाई जाती है। खास बात यह भी समझें कि मध्य काल में उत्तर की सीमाएं माधो सिंह, रिखोला लोदी, भीम सिंह बर्त्वाल जैसे गढ़वाल के योद्धाओं के कारण सुरक्षित रही हैं। चीन से भारत का युद्ध आजादी के बाद हुआ लेकिन तिब्बत से तो गढ़वाल के योद्धा शताब्दियों तक लड़ते रहे। पर्वत की घाटियों में ही तिब्बत के सरदारों को रोकते रहे। सिर्फ गढ़वाल ही नहीं भारत भूमि की रक्षा भी की । राहुल सांकृत्यायन के अनुसार एक बार तो टिहरी के निकट भल्डियाणा तक चले आए थे तिब्बत के सरदार तो फिर ...... गढ़वाल ही क्यों, पूरे भारत देश को इन योद्धाओं का ऋणी होना चाहिए । गाथा सुननी चाहिए,पढ़नी चाहिए।

प्रस्तुति :
डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट विभागाध्यक्ष भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कर्णप्रयाग

1962 भारत-चीन युद्ध के दौरान खाली कराया गया गांव

जादूंग : वाइब्रेंट विलेज के रूप में मिलेगी नई पहचान

भारत–चीन सीमा से लगे जनपद उत्तरकाशी का सीमांत गांव जादूंग अब वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत पर्यटन की नई पहचान बनने की ओर अग्रसर है। 1962 के भारत–चीन युद्ध के दौरान जादूंग गांव खाली कराया गया था। हालाकिं स्थानीय ग्रामीण अपने देवस्थानों की पूजा के लिए गांव आते रहे हैं। अब वाइब्रेंट विलेज योजना के अंतर्गत यहां बुनियादी ढांचे के विकास, पर्यटन सुविधाओं के विस्तार और गांव को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम हो रहा है। निकट भविष्य में जादूंग गांव सीमांत पर्यटन का प्रमुख केंद्र बनेगा और इससे राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ–साथ स्थानीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। योजना के प्रथम चरण में पारम्परिक शैली में 6 होम स्टे का निर्माण कार्य प्रगति पर है तथा दूसरे चरण में 8 होम स्टे बनाये जायेंगे। कुल 14 होम स्टे के पूरा होने पर जादूंग गांव में आने वाले पर्यटकों को ठहरने की आधुनिक सुविधाएं मिलेंगी। इससे एक ओर जहां पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा,वहीं दूसरी ओर स्थानीय युवाओं को रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे।

5 अक्टूबर को जिलाधिकारी प्रशांत आर्य ने जादूंग गांव का स्थलीय निरीक्षण कर निर्माणाधीन कार्यों की प्रगति का जायजा भी लिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को समयबद्धता और गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। निरीक्षण से पूर्व जिलाधिकारी ने सीओ आईटीबीपी एवं अन्य अधिकारियों के साथ समसामयिक विषयों पर चर्चा भी की।

वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम (वीवीपी)

केंद्र सरकार ने अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तराखंड और केंद्र शासित लद्दाख के उत्तरी सीमा से सटे 19 जिलों के 46 ब्लॉकों के 2,967 गांवों के व्यापक विकास के लिए 15 फरवरी 2023 को केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम (वीपीपी) को मंजूरी दी थी। इसके तहत सीमांत गांवों को बसाने के लिए बुनियादी सुविधाओं को तेजी से विकसित किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत भारत–चीन सीमा पर बसे उत्तरकाशी जनपद के गांव नेलांग और जादुंग भी शामिल हैं। ये दोनों गांव वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के गवाह भी रह चुके हैं,युद्ध के दौरान ग्रामीणों को अपने आशियाने छोड़कर जाना पड़ा था। आने वाले समय में ये गांव नए कलेवर में नजर आयेंगे।

प्रस्तुति:
अमन तलवाड़
सह सम्पादक

अम्रदा डेयरी की संचालिका पूर्व शिक्षिका उर्वशी उनियाल महिलाओं के लिए हैं प्रेरणास्रोत

आज के दौर में जहां युवाओं में सरकारी या प्राइवेट सेक्टर की नौकरी करने का क्रेज है, ऐसे में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो स्वरोजगार का रास्ता चुनकर सफलता की राह पर निरंतर आगे बढ़ रहे हैं और अन्य लोगों को भी रोजगार मुहैया करवा रहे हैं। उत्तराखंड में एक ऐसी ही महिला उर्वशी उनियाल एक रोल मॉडल के रूप में सामने आई हैं। उर्वशी उनियाल ने कोविड काल में देहरादून के एक प्रतिष्ठित स्कूल 'द दून गर्ल्स स्कूल' की शिक्षिका की नौकरी छोड़कर दुग्ध उत्पादन व्यवसाय के क्षेत्र में कदम रखा और एक सफल उद्यमी के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाई है। अपने जेठ जी श्री कुलदीप उनियाल जी का हाथ बटाने के उद्देश्य से वह इस उद्यम में आई। गायों से प्रेम तथा खेतों, किसानों और प्राकृतिक उत्पादों के नजदीक रहने की ललक ने इन्हें प्रोत्साहित किया कि वह NDRI Karnal/NDRI से प्रशिक्षण लें और एक अध्यापिका होकर वह फिर से छात्रा बन गई। NDRI ही नहीं, स्टार्ट अप हिमालय ने जब उत्तराखंड के 25 उद्यमियों को चुना तो उनके अच्छे कार्य के लिए उन्हें भी चुना गया और निफ्टम, सोनीपत में प्रशिक्षण भी दिया। गोल्डमैन सैक द्वारा भी उन्हें IIM बेंगलुरु में प्रशिक्षण के लिए चुना गया। उनके अम्रदा डेयरी फार्म की कार्य प्रणाली पूर्ण रूप से वैज्ञानिक तरीकों पर आधारित है। अपने ग्राहकों को शुद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण दुग्ध उत्पाद उपलब्ध करवाना उनका एकमात्र उद्देश्य है। उनका डेयरी मॉडल न केवल किसानों को आजीविका भी दिला रहा है बल्कि महिलाओं को भी सशक्त कर रहा है। उन्होंने डोईवाला के झबरावाला गांव से मात्र पांच गायों से अम्रदा डेयरी फार्म की शुरुआत की और आज उनके व्यवसाय का वार्षिक टर्नओवर डेढ़ करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। उनकी डेयरी के उत्पाद – दूध, घी, पनीर आदि देहरादून के काफी बड़े क्षेत्र में पूर्ण शुद्धता के साथ सप्लाई किये जाते हैं। अपने डेयरी फार्म के अलावा उन्होंने अपने इस प्रोजेक्ट में अब तक 100 से अधिक किसानों को जोड़ा है, जिनमें अधिकांश महिलाएं हैं। किसी को उन्नत नस्ल की गाय दी गई तो किसी को गाय खरीदने के लिए बिना ब्याज के ऋण। इन किसानों का दूध उनकी डेयरी में प्रतिदिन पहुंचता है।

उनकी डेयरी में रोजाना लगभग 800 से 1000 लीटर दूध

एकत्र होता है। दही,मक्खन,घी जैसे उत्पादों के लिए दो प्रोसेसिंग प्लांट भी लीज पर लिए गये हैं। उर्वशी उनियाल ने अंग्रेजी विषय में एम.फिल. किया है। एनडीआरआई करनाल, कृषि विज्ञान केन्द्र और पशु चिकित्सा कॉलेज से डेयरी फार्मिंग की ट्रेनिंग ली है। उनके पति प्रदीप उनियाल चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं, जो उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करते हैं। उनकी दो जुड़वा बेटियां हैं। उर्वशी बताती हैं कि दुग्ध उत्पादकों और डेयरी कारोबारियों को हमेशा अलग–अलग नस्ल की गायें पालनी चाहिए, इससे दूध की मात्रा और गुणवत्ता में विविधता आती है। यह सेहत के लिए बेहतर है और बाजार में दूध की सही कीमत दिलाने में भी उनकी मदद करता है।

उर्वशी द्वारा अपने दुग्ध व्यवसाय में अपनाये गये वैज्ञानिक और आधुनिक तरीकों से ग्राहक पूरी तरह संतुष्ट दिखते हैं। निर्धारित समय पर सील्ड कांच की बोतलों में प्रतिदिन सुबह दूध की होम डिलीवरी, सभी सूचनाएं व्हाटसेप पर देना व लेना, कंप्यूटराइज्ड बिल महीना पूरा होने पर ऑनलाइन उपलब्ध करवाना और ऑनलाइन पेमेंट की व्यवस्था उनके व्यवसाय की अपनी अलग विशेषताएं हैं। लेखिका स्वयं भी लगभग दो वर्ष से अम्रदा डेयरी की नियमित ग्राहक है और उनकी सेवाओं से पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। साईं सृजन पटल आपकी अद्भुत उद्यमशीलता के लिए आपको शुभकामनाएं देता है।

प्रस्तुति :
श्रीमती नीलम तलवाड़

आस्था

रानीगढ़ मंदिर : आस्था, परंपरा और प्रकृति का अद्भुत संगम

उत्तराखंड की सुन्दरता सिर्फ उसकी ऊंची–ऊंची पहाड़ियाँ, हरे– भरे बुग्याल और निर्मल जलधाराओं में ही नहीं, बल्कि यहाँ के धार्मिक स्थल और आस्था के प्रतीकों में भी बसी हुई है। राज्य के टिहरी गढ़वाल जनपद में स्थित रानीगढ़ मंदिर इस धार्मिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मंदिर न केवल अपनी धार्मिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी प्राकृतिक सुंदरता और प्राचीन परंपराओं के कारण भी श्रद्धालुओं का आकर्षण बन चुका है। रानीगढ़ मंदिर, जो भिलंगना विकासखंड के घनसाली तहसील के भिलंग पट्टी में स्थित है, घनसाली बाजार से घुत्तू जाने वाले मार्ग में लगभग 17 किमी. दूर इस प्राचीन मंदिर को सिद्धपीठ के रूप में जाना जाता है।

यह मंदिर भिलंगना नदी के दाहिनी तरफ एक विशाल चट्टान में विराजमान है, जहाँ माता रानीगढ़ की भव्य मूर्ति स्थित है। मंदिर तक पहुँचने के लिए श्रद्धालुओं को लगभग 200 मीटर की पैदल दूरी तय करनी पड़ती है, जो रास्ते में एक सुंदर झरने और चढ़ाई के साथ आगे बढ़ती है। इस पवित्र यात्रा की शुरुआत अंबिका द्वार से होती है, जहाँ श्रद्धालुओं का स्वागत होता है। इस मंदिर से जुड़ी एक दिलचस्प जनश्रुति है – माता की ओखली के बारे में। कहा जाता है कि प्रतिदिन रात में ओखली से कूटने की आवाज सुनाई देती है, जो भक्तों के मन में आस्था का संचार करती है। यह मान्यता भक्तों को एक सशक्त विश्वास देती है कि यहाँ आने से उनकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। मंदिर के पास एक शिवालय, हनुमान मंदिर तथा ग्रामीणों द्वारा अपने पित्रों की स्मृति में छोटे–छोटे मंदिर बनाए गए हैं जो इसकी सुंदरता को और अधिक बढ़ा देते हैं । यहां का वातावरण न केवल भक्तों को आध्यात्मिक शांति देता है, बल्कि प्रकृति प्रेमियों के लिए भी यह स्थल एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है।

मंदिर परिसर में माता की सवारी, यानी शेर की एक अद्भुत प्रतिमा भी स्थित है। इसे देखकर ऐसा लगता है कि माँ रानीगढ़ अपनी सवारी के साथ अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रही हैं। यहां के ग्रामीणों की मान्यता है कि हर दिन बाघ अपनी उपस्थिति दर्ज कराने आता है, जो इस स्थल की रहस्यात्मकता को और बढ़ा देता है। रानीगढ़ मंदिर का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व सिर्फ इसके धार्मिक स्थलों

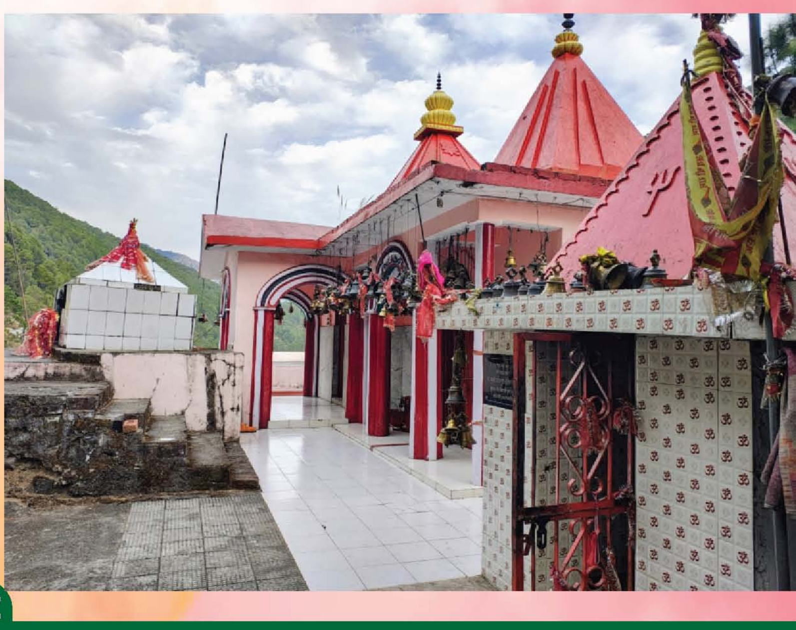

में ही नहीं, बल्कि यहां के मेले और उत्सवों में भी निहित है। प्रत्येक वर्ष 9 मई को यहाँ एक विशाल मेला आयोजित किया जाता है, जिसमें भिलंग पट्टी के सभी गांववासी बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। इस मेले में विशाल भंडारे का आयोजन भी होता है, जहाँ लोग एक साथ मिलकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। इसके अलावा, चैत्र और शारदीय नवरात्रों के समय भी यहाँ भक्तों की भारी भीड़ देखी जाती है। रानीगढ़ मंदिर की भव्यता और प्राकृतिक सौंदर्य से भक्तों को एक विशेष अनुभव प्राप्त होता है। यहां का माहौल न केवल श्रद्धा से भरा होता है, बल्कि यह प्रकृति के बीच स्थित होने के कारण मानसिक शांति का भी अहसास कराता है। भिलंग क्षेत्र के ग्रामीणों का विश्वास है कि जो भी श्रद्धालु इस मंदिर में सच्चे मन से दर्शन करने आते हैं, उनकी सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं। यह मंदिर आस्था और परंपरा का एक जीवंत उदाहरण है, जो उत्तराखंड की धार्मिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। रानीगढ़ मंदिर सिर्फ एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर भी है, जहाँ पर आस्था, परंपरा, और प्रकृति का अद्‌भुत संगम देखने को मिलता है। यहाँ की यात्रा न केवल भक्तों के लिए आध्यात्मिक लाभकारी है, बल्कि यह उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सौंदर्य से अवगत कराने वाली एक शानदार यात्रा भी है।

प्रस्तुति : भगवती प्रसाद स्याल
सहायक अध्यापक, हिन्दी
राजकीय इंटर कॉलेज, कुमशिला
भिलंग, टिहरी गढ़वाल

सम्मान

बाल साहित्य के क्षेत्र में उत्तराखंड के साहित्यकार महावीर रवांल्टा को मिला राष्ट्रीय बालवाटिका सृजन सम्मान-2025

शिक्षा, साहित्य एवं सांस्कृतिक संस्कार की मासिक पत्रिका 'बालवाटिका', राजस्थान साहित्य अकादमी और विनायक विद्यापीठ, भूणास (भीलवाड़ा) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 26वीं राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में महावीर रवांल्टा को बाल साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय अवदान के लिए श्यामसुंदर नागला स्मृति राष्ट्रीय बालवाटिका सृजन सम्मान–2025 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनके साहित्यिक योगदान के लिए दिया गया, जिसमें बच्चों के लिए उनकी कृतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समारोह में महावीर रवांल्टा को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, शाल, पुष्पहार तथा नगद राशि भेंट कर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और 'बालवाटिका' के संपादक डॉ. भैरूलाल गर्ग, 'बालप्रहरी' के संपादक उदय किरौला, डॉ. श्यामसुंदर भट्ट, पूर्व अध्यक्ष नगर विकास न्यास लक्ष्मी नारायण डाड, प्रधानमंत्री साहित्य मंडल श्रीनाथ द्वारा श्याम प्रकाश देवपुरा, राजेन्द्र ओस्तवाल, और विनायक विद्यापीठ के निदेशक डॉ. देवेन्द्र कुमावत ने उन्हें सम्मानित किया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय संगोष्ठी का केन्द्रीय विषय 'भारतीय ज्ञान परंपरा और हमारा दायित्व' था। इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में देशभर से पधारे प्रतिष्ठित बाल साहित्यकारों ने भारतीय ज्ञान परंपरा और बच्चों के साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार साझा किए। राष्ट्रीय बाल काव्य गोष्ठी सत्र में महावीर रवांल्टा ने अपनी रवांल्टी बाल कविता 'बंठ्या माने आपड़ गां, निपणु दूध साजी छां'– का पाठ कर सभी का ध्यान आकर्षित किया। महावीर रवांल्टा के बाल साहित्य में उनके योगदान की

चर्चा करते हुए उनके द्वारा रचित 'ननकू नहीं रहा', 'गोलू पढेगा', 'विनय का वादा', 'अनोखा जन्मदिन', 'जुगनू की पढ़ाई', 'दैत्य और पांच बहिनें', 'ढेला और पत्ता', 'पोखू का घमंड', 'चल मेरी बहिनें' जैसी प्रसिद्ध कृतियों का उल्लेख किया गया। अब तक 44 पुस्तकें प्रकाशित कर चुके महावीर रवांल्टा को बाल साहित्य सृजन के लिए कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें बाल साहित्य संस्थान (अल्मोड़ा), उत्तराखंड बाल कल्याण साहित्य संस्थान (खटीमा), शब्द प्रवाह (उज्जैन) और पं. हरप्रसाद पाठक स्मृति बाल साहित्य समिति (मथुरा) प्रमुख हैं। महावीर रवांल्टा वर्तमान में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पुरोला में मुख्य फार्मेसी अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं और उनके साहित्यिक कार्यों ने न केवल बच्चों के जीवन को समृद्ध किया है, बल्कि भारतीय बाल साहित्य के क्षेत्र में एक नई दिशा भी प्रदान की है।

प्रो. (डॉ०) के० एल० तलवाड़

अनूठी पहल

पति–पत्नी सुधीर तिवारी व मीना तिवारी हर शुभ कार्य पर लगवाते हैं एक पौधा

आज जब धरती गंभीर पर्यावरणीय संकटों से जूझ रही है तब कुछ ऐसे भी लोग हैं जो अपने छोटे–छोटे प्रयासों से बड़ा परिवर्तन ला रहे हैं। यह प्रयास हैं चिपको की धरती चमोली जनपद में गोपेश्वर गांव निवासी सुधीर तिवारी और उनकी पत्नी मीना तिवारी का। गोपीनाथ मंदिर के समीप रहने वाले सुधीर तिवारी बताते हैं कि वे हर शुभ कार्य पर संबंधित व्यक्ति से एक पौधा लगवाते हैं। जैसे जन्मदिन, शादी, भागवत कथा, शादी की सालगिरह, नए घर का गृह प्रवेश, नये वाहन की खरीददारी आदि अवसरों पर वे एक पौधा लगवाते हैं। 2012 से शुरू यह मुहिम अब रंग लाने लगी है, जब ग्वाड़ व सिरोली गांव में बांझ का जंगल, गोपेश्वर के समीप जन्मदिवस वन तैयार हो गया है।

इस दंपति का मानना है कि जैसे हम जीवन में हर शुभ कार्य की शुरूआत भगवान के नाम से करते हैं वैसे ही धरती की सेवा के बिना कोई भी शुभ कार्य अधूरा है। इसलिए हमें हर शुभ अवसर पर धरती पर एक पौधा जरूर लगाना चाहिए "एक पौधा लगाना, भविष्य की पीढ़ी के लिए उपहार देना है"। वैसे भी हमारे पहाड़ों की पहचान पेड़–पौधों से ही है इसीलिए लोकगायक नरेंद्र सिंह नेगी ने भी अपने गीतों के माध्यम से कहा है कि डाली (पेड़–पौधे) कटेंगे तो माटी बहेगी यानी भूस्खलन आएगा और लोग इन पहाड़ों का मजाक उड़ायेंगे। तिवारी बताते हैं कि आज गोपेश्वर मण्डल घाटी के सगर, गंगोलगांव, ग्वाड, सिरोली आदि गांवों में इस मुहिम के सकारात्मक परिणाम आने शुरू हो गए हैं। धरती को सजाने

की यह प्रेरणा उन्हें लखनऊ में निवास के दौरान मिली जब वहां की गर्मी से परेशान होकर उन्हें लगा कि हमें अपने पहाड़ की हरियाली को बरकरार रखने के लिए कुछ करना चाहिए। इस अभियान से बहुत ही सकारात्मक फायदा मिल रहा है आज इन गांवों में नीबू, अमरूद, आंवला, नाशपाती, आदि उगाकर न केवल पहाड़ों की हरियाली को बढ़ा रहे हैं बल्कि रोजगार भी पैदा कर रहे हैं। जंगलों में फलदार पेड़–पौधे लगाने से एक फायदा यह भी हो रहा है कि जंगलों से बंदर

आवासीय इलाकों तक नहीं आ पा रहे हैं। सिरोली गांव के किशन सिंह बिष्ट बताते हैं कि उन्होंने इस अभियान में अमरूद का पौधा लगाना शुरू किया था। अमरूद से लगाव होने के कारण उन्होंने अमरूद की ही और पौध लगाई और आज वे गोपेश्वर में अमरूद बेचकर अपनी आजीविका भी चला रहे हैं।

सुधीर तिवारी बताते हैं कि राष्ट्रीय सेवा योजना के बच्चों के साथ मिलकर उन्होंने गोपेश्वर और सगर गांव के बीच एक जन्मदिवस वन भी तैयार किया है। साथ ही गांव की महिला मंगल दल और नव युवक मंगल दल के साथ मिलकर भी वे अपने अभियान को आगे बढ़ाते हैं। वर्ष 2019 में इनके द्वारा इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए चरण पादुका गोथल समिति का गठन किया गया, जिसके साथ मिलकर आज डाल्यों के ये दगड्या धरती की हरियाली बढ़ा रहे हैं। इस कार्य में उनकी पत्नी मीना तिवारी, सिरोली गांव के विजय बिष्ट, ग्वाड गांव के पुष्कर बिष्ट, उनका परिवार और मित्र भी शामिल हैं।

सुधीर बिष्ट बताते हैं कि जब हमने यह अभियान शुरू किया था तो लोगों का सकारात्मक सहयोग नहीं मिलता था लेकिन धीरे–धीरे जब यह जागरूकता आगे बढ़ी तो लोग पूर्ण सहयोग देते गए। आज जिस घर में शुभ कार्य होता है तो पहले सभी लोग उस घर में चाय मिठाई खाते हैं और फिर पौधरोपण का कार्य किया जाता है। शादी के दिन भीड़भाड़ और व्यस्तता के चलते वे इस कार्य को उस दिन सम्पन्न करते हैं जब नव विवाहित जोड़ा दुरागमन पर घर आता है। इस कार्य में एक समस्या यह भी आती है कि उन्हें सही समय पर पौध उपलब्ध नहीं हो पाती थी लेकिन अब वन विभाग, उद्यान विभाग, और जड़ी बूटी शोध संस्थान से भी उनको भरपूर मदद मिल रही है।

वे आगे बताते हैं कि पौधों की देखभाल के लिए वे ट्री गार्ड भी लगाते हैं साथ ही सड़क किनारे लगी पौध पर पानी देने के लिए वे टॉफी के खराब डिब्बों में छेद कर देते हैं जिससे पानी धीरे–धीरे रिसकर पौधों की जड़ों तक पहुंच जाता है। अपने इस नेक कार्य में वह पल उनके लिए गौरवान्वित करने वाला था जब 9 सितंबर 2025 को हिंदुस्तान न्यूज पेपर की ओर से उन्हें हिमालय हितैषी पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार जब मुख्यमंत्री धामी के हाथ से लिया तब उन्हें महसूस हुआ कि वे समाज के हित में कुछ कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा उन्हें 2023–24 में गौरा देवी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। समय–समय पर उन्हें वन विभाग द्वारा भी सम्मानित किया जाता रहा है।

तिवारी दंपति का ये कार्य यह दिखाता है कि जीवन के हर महत्वपूर्ण पल को केवल उत्सव तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उसे प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी में बदलना चाहिए। सच्चा शुभ कार्य वही है जो दूसरों के कल्याण से जुड़ा हो। आने वाली पीढ़ी और युवा वर्ग से सुधीर तिवारी अपील कर रहे हैं कि वे व्यसनों से दूर रहें क्योंकि उत्तराखण्ड के जंगलों में आग लगने का सबसे बड़ा कारण शराब पीकर जंगल में कैम्पिंग करना है। कैम्पिंग के दौरान ही आग की ज्यादा घटनाएं हो रही हैं। युवा अगर सही दिशा में जाता है तो समाज और राष्ट्र भी सही दिशा में जाता है। आज की पीढ़ी जब मिट्टी को डस्ट कहती है तो सुधीर तिवारी दुखी हो जाते हैं एक समय था जब हम मिट्टी को सोना कहते थे और आज हम डस्ट कह रहे हैं। पर्यावरण है तभी मानव जीवन का अस्तित्व है यदि हम इस पर्यावरण को नहीं बचा पाएंगे तो एक दिन मानव जीवन भी समाप्त हो जाएगा। चमोली की धरती पर इसी अस्तित्व के लिए गौरा देवी और चण्डी प्रसाद भट्ट जैसे पर्यावणविदों ने संघर्ष किया है।

पर्यावरण निरंतर परिवर्तित हो रहा है एक समय था जब गोपेश्वर में भी बर्फ गिरती थी लेकिन आज वह ग्लोबल वार्मिंग के कारण नहीं गिर रही है। यदि अभी भी मानव जगत पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक नहीं हुआ तो आने वाले 50 वर्षों में गंभीर और भयावह परिणाम देखने को मिलेंगे।

प्रस्तुति–
कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

परम्परा

सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व का प्रतीक : अल्मोड़ा का दशहरा पर्व

वैदिक काल से ही हमारे देश की धरती कला व संस्कृति की एक अद्भुद मिसाल रही है। इसी मिसाल को कायम करने का श्रेय उत्तराखण्ड राज्य को भी जाता है। राज्य का अल्मोड़ा नगर इन सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहते हुए सदा से ही सांस्कृतिक चेतना का उद्गम स्थल रहा है। मुझे कला और संस्कृति के संगम की पावन धरती अल्मोड़ा में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अतः बाल्यकाल से ही रीति रिवाज, खान पान, त्यौहारों व कला के विभिन्न पहलुओं को नजदीक से देखा और जिया है। अल्मोड़ा की एक प्रमुख विशेषता यहां का दशहरा पर्व है। दशहरा पर्व में रामलीला मंच तथा रावण परिवार के पुतलों का निर्माण विशेष है।

अल्मोड़ा की रामलीला की विशेषताओं पर दृष्टिपात करें तो यहां की रामलीला में पात्रों द्वारा लंबे–लंबे संवादों को याद कर शास्त्रीय संगीत के साथ हारमोनियम व तबले के साथ गाया जाता है। कुछ स्थानों पर पर्दे के पीछे संगीत का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए एक महीना पहले से ही तालीम प्रारम्भ हो जाती है, अल्मोड़ा में अनेक स्थानों पर रामलीला का मंचन होता है परन्तु हुक्का क्लब की रामलीला अद्वितीय होती है। यहां की रामलीला को देश के अनेक स्थानों पर मंचन हेतु आमंत्रित किया जाता रहा है। वर्तमान में अल्मोड़ा की रामलीला की सबसे बड़ी विशेषता जो देखने को मिल रही है वह इसमें लड़कियों का वर्चस्व है। पुरुष प्रधान पात्र जैसे है– राम, लक्ष्मण, रावण, मेघनाद ,अंगद जैसे पात्रों की भूमिका भी लड़कियां व महिलाऐं निभा रही हैं। ताड़का, शूर्पणखा व मंदोदरी जैसे किरदारों को भी लड़कियां जीवन्त कर रही हैं। शास्त्रीय गायन व नृत्य के द्वारा अनेक किरदारों को निभाते हुए महिलाऐं, महिला सशक्तिकरण की मिसाल पेश कर रही हैं। विगत वर्षों में कई शहरों में फिल्मी गीतों व संगीत के प्रयोग ने रामलीला के वास्तविक स्वरूप को दूषित किया है , वहीं दूसरी ओर अल्मोड़ा की रामलीला में आज भी पारम्परिक परिपाटी का वास्तविक रूप विद्यमान है। अल्मोड़ा की रामलीला, रामायण को उसके सम्पूर्ण स्वरूप के साथ लोगों तक पहुंचाती है।

दशहरा पर्व की दूसरी विशेषता शहर में पुतलों का निर्माण है। रावण के अतिरिक्त उसके परिवार के अनेक पुतले , कुंभकर्ण, मेघनाद, मारीच, ताड़का, सुबाहु, शुंभ, निशम्भु, नारांतक, देवांतक, आदि लगभग 30 पुतले अत्यन्त खुबसूरती से बनाए जाते हैं। पुतलों में भूसा भरकर उन्हें सिला जाता है तथा उसके ऊपर कपड़े से उचित आकृति बनाई जाती है। पुतले का चेहरा प्लास्टर आफ पेरिस द्वारा निर्मित होता है । इसके उपरान्त इन्हें विभिन्न पोशाकों, अस्त्र शस्त्रों व आभूषणों से सुसज्जित किया जाता है जिससे इनकी छटा देखते ही बनती है। दशहरे के दिन नगर परिक्रमा के उपरांत इनका दहन किया जाता है । इन पुतलों का निर्माण सन 70 के दशक से हो रहा है। अनेक पीढ़ियों से अल्मोड़ा की सर्वप्रमुख

विशेषता जो में देखती आई हूं, वह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक सदभावना है। पुतलों के निर्माण व इसकी साज सज्जा में स्थानीय कलाकारों की अहम भूमिका होती है, चाहे वह किसी भी धर्म का क्यों न हो। साज सज्जा में मुखाकृति, वस्त्र, अस्त्र–शस्त्र तथा शारीरिक सुंदरता का निर्माण शामिल है।

दशहरा के अवसर पर अल्मोड़ा जाने पर एक अलग ही अनुभूति होती है। शहर की सजावट व रौनक एक अलग अनुभव प्रदान करती है। रामलीला के मंचन के कारण, शहर में रात्रि का भी अनुभव नहीं होता। यदि एक बार अल्मोड़ा व इसके आसपास की नैसर्गिक सुन्दरता एवं दशहरा महोत्सव को देख लिया जाए तो निश्चित ही मन बार–बार यहाँ आने के लिए करेगा । पर्व को सांस्कृतिक स्वरूप की सम्पूर्णता प्रदान करने में स्वयं सेवी संस्थाओं, महिला मंगल दल व स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा शहर में झाकियां निकली जाती हैं जो इस पर्व को चार चांद लगाती हैं। वर्तमान आधुनिक समय में भी नगर के निवासियों ने अपनी इस संस्कृति को संजो कर रखा है। यद्यपि पलायन के कारण नवीन पीढ़ी का अधिकतम भाग महानगरों में बस चुका है साथ ही अनेक कला मर्मज्ञ, जिन्होने इसे उन्नत स्तर पर ले जाने का कार्य किया वो आज इस दुनिया में नहीं हैं। इसके उपरान्त भी क्षेत्र में निवास करने वाले बच्चे, युवा, व्यापारी, महिला दल, समाज सेवी व कलाकारों के अथक प्रयासों के कारण ये सांस्कृतिक पर्व आज भी जीवित है।

इनके कारण ही नई पीढ़ी दशहरे के महत्व के द्वारा भारतीय सांस्कृतिक को जान रही है। यदि इसके दूसरे पक्ष को देखें तो नशे व शराब का सेवन इसमें व्यवधान उत्पन्न करता है साथ ही कुछ स्थानों पर आधुनिकता ने भी इसे प्रभावित किया है।

प्रस्तुति : डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

अनुकरणीय

स्व.सुदेश मल्होत्रा के नेत्रदान से मिलेगी जरूरतमंदों को नेत्रज्योति

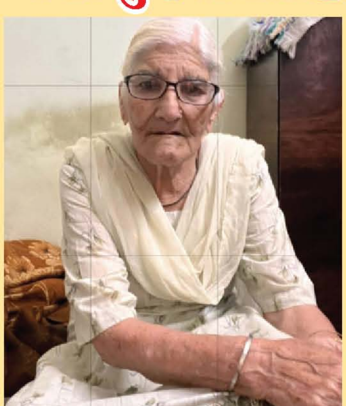

दीपावली पर्व के दिन देह त्यागने वाली प्रेमनगर देहरादून निवासी श्रीमती सुदेश मल्होत्रा अपने नेत्रदान संकल्प के चलते जरूरतमंदों के लिए नेत्रदान कर अनमोल तोहफा दे गईं। उनकी अंतिम इच्छा के अनुरूप उनके नाती वंश वाधवा ने अपनी नानी की अंतिम इच्छा पूरी करते हुए उनके स्वर्गवास के तुरंत बाद हिमालयन हॉस्पिटल की नेत्रदान रेस्क्यू टीम से संपर्क किया। टीम ने दिवंगत के निवास पर पहुंच कर पार्थिव शरीर से दोनों कॉर्निया को सुरक्षित रूप से प्राप्त किया। अपने प्रियजन के जाने के दुःख को दूसरों की जिंदगी में रोशनी लाने वाले ऐसे उदाहरण समाज में प्रेरणा बन रहे हैं। स्वर्गीय श्रीमती सुदेश मल्होत्रा अत्यंत मृदुभाषी व परोपकारी स्वभाव की रही हैं।

उनके पुत्र इन्द्र मोहन मल्होत्रा भी सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करते हैं। उल्लेखनीय है कि श्रीमती सुदेश मल्होत्रा प्रो.के.एल.तलवाड़ के छोटे भाई पवन तलवाड़ (प्रवक्ता अंग्रेजी) की सास थीं। साईं सृजन पटल परिवार की ओर से ऐसी पुण्य आत्मा को शत–शत नमन।

1 अक्टूबर

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस

वृद्धजनों की सेवा के लिए सरकार तैयार करेगी 150 केयरगिवर

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर देहरादून के निम्बूवाला स्थित हिमालयन कल्चरल सेंटर में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राज्य–स्तरीय कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने इस अवसर पर राज्य के सभी वरिष्ठ नागरिकों को शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने उपस्थित बुजुर्गों को सम्मानित किया और वरिष्ठ नागरिक सम्मान शपथ भी दिलाई। उन्होंने अपनी माता के नाम पर एक पौधा भी लगाया।कार्यक्रम के दौरान, मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ नागरिकों की सेवा के लिए समर्पित एक मुफ्त एम्बुलेंस वैन को हरी झंडी दिखाई और बुजुर्ग प्रतिभागियों की एक वॉकथॉन रैली को भी रवाना किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक समाज के स्तंभ हैं, जिनके आशीर्वाद और अनुभव सभी के लिए मार्गदर्शक शक्ति का काम करते हैं। राज्य और केंद्र सरकारें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बुजुर्गों की गरिमा, सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए लगातार काम कर रही हैं। अटल वयोअभ्युदय योजना, प्रधानमंत्री वय वंदना योजना, राष्ट्रीय वयोश्री योजना और वृद्धावस्था पेंशन योजना जैसी योजनाओं का जिक्र करते हुए बताया कि राज्य में लगभग छह लाख बुजुर्ग लाभार्थी सीधे अपने बैंक खातों में डीबीटी के माध्यम से पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।राज्य में वृद्धाश्रमों के बुनियादी ढांचे को लगातार मजबूत करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सरकारी वृद्धाश्रम वर्तमान में बागेश्वर, चमोली और उत्तरकाशी जिलों में संचालित हैं, जबकि देहरादून, अल्मोड़ा और चंपावत में नए भवनों का निर्माण चल रहा है। केंद्र सरकार के सहयोग से ऊधम सिंह नगर के रुद्रपुर में एक मॉडल वृद्धाश्रम का निर्माण किया जा रहा है। रुद्रप्रयाग, टिहरी, पौड़ी और पिथौरागढ़ में भी वृद्धाश्रम स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है।

वरिष्ठ नागरिकों की उचित देखभाल सुनिश्चित करने के लिए जेरियाट्रिक केयरगिवर प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। राज्य ने इस वर्ष 150 मास्टर ट्रेनर और केयरगिवर को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा है। राष्ट्रीय वयोश्री योजना के तहत बुजुर्ग नागरिकों को सहायक उपकरण प्रदान किए जा रहे हैं। इस वर्ष 1300 वरिष्ठ नागरिकों के लिए मुफ्त मोतियाबिंद सर्जरी करने का लक्ष्य रखा गया है। बुजुर्गों के अधिकारों की रक्षा के लिए माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण–पोषण और कल्याण अधिनियम भी राज्य में लागू किया गया है।

प्रस्तुति :
प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

कवि लीलाधर जगूड़ी को 'पारस शिखर' सम्मान

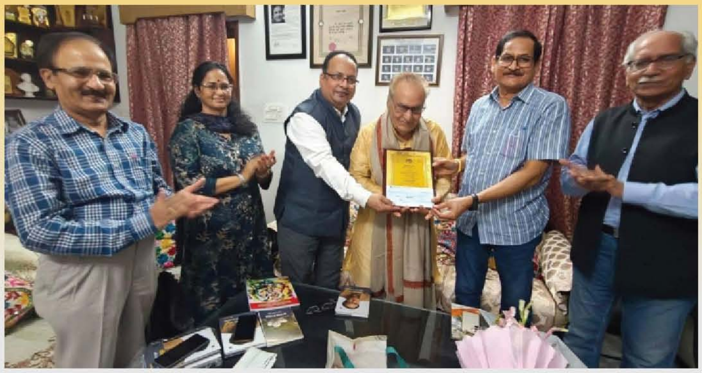

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी को सतत लेखन एवं हिन्दी साहित्य में उनके अप्रतिम योगदान के लिए वर्ष 2024 का 16 वां 'पारस शिखर सम्मान' 13 अक्टूबर को देहरादून जोगीवाला स्थित उनके आवास पर प्रदान किया गया। हिन्दी साहित्य को विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाशीलता से नई दिशा प्रदान करने वाले लीलाधर जगूड़ी को यह सम्मान 'पारस बेला न्यास' की ओर से न्यास के संयोजक अनिल पाठक द्वारा प्रदान किया गया। उन्हें पुरस्कार राशि का चेक, शॉल, प्रशस्तिपत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

इस अवसर पर लीलाधर जगूड़ी पर डॉ.ओम प्रकाश निश्चल द्वारा लिखित आलोचनात्मक पुस्तक 'लीलाधर जगूड़ी : कवि परंपरा में अद्वितीय' एवं उन्हीं के द्वारा संपादित पुस्तक 'पृथ्वी और आकाश : लीलाधर जगूड़ी की प्रतिनिधि कविताएं' का विमोचन भी श्री जगूड़ी ने किया। उल्लेखनीय है कि 'पारस शिखर सम्मान' शिक्षाविद एवं कवि पं.पारस नाथ पाठक 'प्रसून' तथा उनकी जीवन संगिनी एवं समाजसेविका श्रीमती बेला देवी की पुण्य स्मृति में स्थापित 'पारस बेला न्यास' द्वारा वर्ष 2009 से प्रतिवर्ष हिन्दी भाषा के एक वरिष्ठ कवि को प्रदान किया जाता है।

प्रोत्साहन

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस

मुख्यमंत्री ने 326 मेधावी बालिकाओं को दिये स्मार्टफोन

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर अपने कैम्प कार्यालय स्थित मुख्य सेवक सदन में आयोजित बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 326 मेधावी बालिकाओं को स्मार्टफोन प्रदान किये गये। जनपद स्तर पर हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा की प्रथम तीन टॉपर बालिकाओं एवं विकासखंड स्तर पर टॉपर बालिकाओं को मुख्यमंत्री द्वारा पुरस्कृत किया गया। मुख्यमंत्री ने सभी को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस वर्ष भी बेटियों ने अपने परिश्रम, प्रतिभा और संकल्प के बल पर बोर्ड परीक्षाओं में अद्भुत प्रदर्शन किया है। इस वर्ष हाईस्कूल की परीक्षा में कुल 90 प्रतिशत विद्यार्थी सफल हुए, जिसमें बालिकाओं का सफलता प्रतिशत 93 प्रतिशत से अधिक रहा और इंटरमीडिएट परीक्षा में 83 प्रतिशत विद्यार्थी सफल रहे, जिनमें बालिकाओं का सफलता प्रतिशत 86 प्रतिशत से अधिक रहा।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने राज्य में सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 30 प्रतिशत आरक्षण देने के साथ ही मुख्यमंत्री नारी सशक्तिकरण योजना,मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना,मुख्यमंत्री वात्सल्य योजना व नंदा गौरा योजना जैसी योजनाएं प्रारंभ की हैं। इन योजनाओं के माध्यम से प्रदेश की बेटियां सरकारी सेवाओं में चयनित हो रही हैं एवं स्वयं सहायता समूहों, स्टार्ट–अप्स और लघु उद्योगों के माध्यम से भी आत्मनिर्भर बन रही हैं। बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना,बालिका समृद्धि योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा,सुरक्षा और समृद्धि को सुनिश्चित किया जा रहा है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, उज्ज्वला योजना,लखपति दीदी योजना जैसी पहलों के माध्यम से मातृशक्ति का सम्मान किया गया है। महिला छात्रावास के निर्माण, मुफ्त साइकिल योजना और बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम जैसी योजनाओं के माध्यम से राज्य में बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

प्रस्तुति–
प्रो. जानकी पंवार, सेवानिवृत्त प्राचार्य,
सदस्य सलाहकार मंडल साईं सृजन पटल

सुविधा

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक

दून पुस्तकालय एवं शोध केंद्र

पुस्तकालय लाभ कमाने के उद्देश्य से नहीं बल्कि सार्वजनिक संस्थाओं के रूप में काम करते हैं। इसी क्रम में हम बात करेंगे 'दून पुस्तकालय एवं शोध केंद्र' की। देहरादून में स्मार्ट सिटी परियोजना के अंतर्गत इसे एक नया रूप दिया गया है। इससे पहले यह संस्थान परेड ग्राउंड के निकट एक छोटे भवन में चलता था। अब यह लैंसडाउन चौक के समीप नए भवन में शिफ्ट हो गया है। यह युवाओं के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रहा है,विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए। दून पुस्तकालय 16 मार्च 2006 को स्वायत संस्था के रूप में स्थापित हुआ था। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने इसका लोकार्पण किया था। 16 वर्ष तक यह परेड ग्राउंड के निकट संचालित होता रहा। अब यह नई इमारत में चलाया जा रहा है,जिसे विशेष रूप से पुस्तकालय के लिए बनाया गया है। इसकी संचालन व्यवस्था दून पुस्तकालय सोसाइटी के तहत होती है,जिसमें मुख्य सचिव गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष हैं। दून पुस्तकालय एवं शोध केंद्र में ह्यूमैनिटीज से जुड़े विषय – अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, दर्शनशास्त्र, भूगोल, धर्म, कॉमर्स, संस्कृति, साहित्य आदि सहित 39002 पुस्तकें और 55 से अधिक उच्च स्तरीय जर्नल उपलब्ध हैं। इसके अलावा अनेकों संदर्भ ग्रन्थ, प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकें,स्टोरी बुक्स व महान व्यक्तित्वों से जुड़ी पुस्तकें भी यहां उपलब्ध हैं। 2007–08 में इसके मात्र 54 सदस्य थे,जो वर्तमान में 7412 तक हो गए हैं, यह इसकी बढ़ती लोकप्रियता का परिचायक है। यहां 250 लोगों के बैठने की क्षमता वाले अध्ययन कक्ष उपलब्ध हैं। आम पाठकों के लिए लाइब्रेरी सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक खुली रहती है। सदस्यता शुल्क 300 रुपए प्रतिवर्ष और 1,000 प्रतिभूति राशि है,जो सदस्यता समाप्ति पर वापस मिल जाती है। आजीवन सदस्यता, 25 वर्ष के लिए 2000 रुपए में मिलती है।सदस्यों को 15 दिन के लिए दो और आजीवन सदस्यों को एक महीने के लिए चार पुस्तकें निर्गत की जाती हैं। रीडिंग रूम सुबह 10 से शाम 5 बजे तक खुलता है,जबकि

बाहरी रीडिंग रूम सुबह साढ़े आठ से शाम साढ़े बजे तक निशुल्क उपलब्ध रहता है। 30–40 लोगों के लिए ई–लाइब्रेरी भी है,जहां वे ऑनलाइन सामग्री देख सकते हैं।

दून पुस्तकालय एवं शोध केंद्र में समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किये जाते रहे हैं। दिसंबर 2015 में 'अनफोल्डिंग सेन्ट्रल हिमालया – कैंडिल ऑफ कल्चर', मार्च 2018 में 'वाटर हिमालया : पास्ट, प्रेजेंट एंड फ्यूचर' और अक्टूबर 2018 में 'मध्य एवं पश्चिम हिमालय की संकटग्रस्त भाषाएं' पर चर्चा हुई। पुस्तकालय के ऊपरी हिस्से में उत्तराखंड की लोक संस्कृति,कला,बोली,गीत और फिल्म सामग्री का संग्रहालय भी विकसित किया गया है। इस संग्रहालय के लिए संस्कृतिकर्मी स्व. जुगल किशोर पेटशाली और पूर्व मुख्य सचिव एस.के.दास ने महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान की है। आज की तारीख में दून पुस्तकालय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में युवाओं का प्रमुख पंसदीदा स्थल बन चुका है। पुस्तकालय युवा पाठकों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए बुक बैंक का विस्तार कर रहा है। बच्चों के लिए विशेष बाल अनुभाग है,जिसमें हिन्दी,अंग्रेजी,कुमाऊँनी, गढ़वाली, जौनसारी,गुर्जरी जैसी बोली–भाषाओं की 1500 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। बाल अनुभाग में कहानी सुनाने,संगीत सत्र,फिल्म स्क्रीनिंग, भाषा कार्यशालाएं और क्विज जैसी गतिविधियां भी आयोजित होती हैं। दून पुस्तकालय और शोध केंद्र रविवार और माह के दूसरे शनिवार को बंद रहता है। पुस्तक प्रेमियों और शोधार्थियों की मांग थी कि लाइब्रेरी रविवार को भी खोली जाए।

हिंदुस्तान दैनिक समाचार पत्र ने अपने 'बोले देहरादून' अभियान के तहत इस 4 अक्टूबर के अंक में इस मुद्दे को प्रभावी ढंग से उठाया।उसके अगले दिन यानि 5 अक्टूबर 2025 को इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। पुस्तकालय अध्यक्ष जय भगवान गोयल ने जानकारी दी है कि नौ नवंबर राज्य स्थापना दिवस से पुस्तकालय हर रविवार को भी खुला रहेगा।

प्रस्तुति-प्रो. (डॉ०) के. एल. तलवाड़

उत्सव

जौनसार की होलियात : परंपरा, नृत्य और सामूहिक उल्लास का पर्व

जौनसार–बावर का नाम लेते ही मन में लोकसंस्कृति, देवपरंपरा और सामूहिक आनंद का दृश्य उभर आता है। इस हिमालयी जनजातीय क्षेत्र की पहचान केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं, बल्कि अपनी जीवंत परंपराओं से भी है। इन्हीं में से एक है होलियात, जो दीपावली के अवसर पर मनाया जाने वाला चार दिवसीय उत्सव है। होलियात का प्रारंभ छोटी होलियात से होता है और इसका समापन जन्दोई के साथ होता है। इन दिनों गाँव–गाँव के लोग पंचायत के आँगन में एकत्र होकर हारुल, झूमर और रासों नृत्य प्रस्तुत करते हैं। यह नृत्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि जौनसारी जीवनशैली की आत्मा है, जहाँ प्रत्येक थिरकन में सामूहिकता, साहस और उत्साह झलकता है।

होलियात में अग्नि प्रज्ज्वलन का विशेष महत्व होता है। लोग जलती हुई मशालें लेकर गाँव के आंगन में खूब हारुल नृत्य करते हैं। यह अग्नि बुराई पर अच्छाई की विजय और जीवन में प्रकाश के आगमन का प्रतीक मानी जाती है। पर्व के अंत में प्रातः किसी गाँव में कट का हांडी और हिरण नृत्य तो किसी गाँव में बुढ़ाच जैसे अनोखे लोकनृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं, जो उत्सव की गरिमा को और भी बढ़ाते हैं। ढोल, नगाड़ों और रणसिंघों की गूंज से जब सारा वातावरण मुखरित होता है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो समूचा पर्वत प्रदेश आनंद में डूब गया हो। महिलाएँ और पुरुष मिलकर देवताओं का आह्वान करते हैं, और गाँव एक परिवार बन जाता है। होलियात केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जौनसार की सांस्कृतिक आत्मा और लोकअभिव्यक्ति का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि परंपरा तब जीवित रहती है, जब उसमें समाज की सामूहिक भावना, उत्साह और एकता का प्रकाश निरंतर प्रज्ज्वलित रहे।

प्रस्तुति- मनीष कुमार, कनिष्ठ लिपिक राजकीय महाविद्यालय , चकराता

रुद्रप्रयाग के रघुवीर लाल बने कानपुर के पुलिस कमिश्नर

वर्ष 1997 बैच के आईपीएस रघुवीर लाल,जो कि मूल रूप से रुद्रप्रयाग जनपद के अगस्त्यमुनि ब्लॉक के मणिगुह भटवाड़ी गांव के निवासी हैं,को उत्तर प्रदेश के कानपुर में पुलिस कमिश्नर बनाया गया है। इससे रुद्रप्रयाग में खुशी की लहर है। इससे पूर्व वे उत्तर प्रदेश में एडीजी सुरक्षा के पद पर तैनात थे। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें कानपुर कमिश्नरेट की कमान सौंपी है। रघुवीर लाल ने हाईस्कूल राजकीय इंटर कालेज गणेशनगर और इंटरमीडिएट राजकीय इंटर कालेज अगस्त्यमुनि से किया।

बी.एस–सी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि से वर्ष 1991 में की। वे उत्तरकाशी में एसडीएम के पद पर भी रहे हैं। रघुवीर लाल बसपा शासनकाल में सृजित पद एसएसपी कानून व्यवस्था पर भी तैनात रहे और अपराधियों की धरपकड़ में खुद दबिश देते थे। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति के दौरान उन्होंने संसद के लोकसभा सचिवालय में संयुक्त सचिव (सुरक्षा) का दायित्व भी निभाया। वर्ष 2023 में उन्हें विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से भी सम्मानित किया जा चुका है। प्रतिनियुक्ति से लौटने के पर वह एडीजी सुरक्षा बने। उन्होंने एसपी सोनभद्र, चित्रकूट, अलीगढ़, आगरा, मेरठ और गाजियाबाद के रूप में भी कार्य किया।

प्रतिभा

देहरादून की एंजेल नैथानी ने केबीसी में जीते साढ़े बारह लाख रुपए

रायपुर देहरादून के केसरवाला निवासी व मूल रूप में पौड़ी के रहने वाले मुकेश नैथानी व प्रीति नैथानी की 11वर्षीय बेटी एंजेल ने 'कौन बनेगा करोड़पति' टीवी शो के 17 वें सीजन के 44 वें एपिसोड में साढ़े बारह लाख रुपए (प्वाइंट्स) जीते हैं। इस एपिसोड का प्रसारण नौ व तेरह अक्टूबर को हुआ था। एंजेल द्वारा आत्मविश्वास पूर्वक दिए 12 प्रश्नों के सही उत्तर ने उन्हें यह प्राइज मनी जीतने में मदद की। एंजेल की चुलबुली बातों ने शो के होस्ट व फिल्म जगत के महानायक अमिताभ बच्चन को भी हैरत में डाल दिया। केबीसी जूनियर स्पेशल की हॉट सीट बैठने वाली एंजेल सहस्रधारा रोड स्थित दून ब्लॉसम स्कूल की कक्षा छह की छात्रा हैं। उनके पिता मुकेश नैथानी उत्तराखंड सचिवालय राज्य संपत्ति विभाग में मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं व मां प्रीति नैथानी गृहणी हैं। माता–पिता ने बताया कि एंजेल पिछले दो वर्षों से इस कार्यक्रम के लिए तैयारी कर रही थीं। हॉट सीट पर बैठने से पहले एंजेल ने ऑडिशन, लिखित परीक्षा और साक्षात्कार जैसे महत्वपूर्ण पड़ाव पार किये। इस वर्ष जब उनका चयन हुआ तो परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। शो के सेट पर एंजेल की मां प्रीति नैथानी भी साथ थीं। जब अमिताभ बच्चन ने उनसे पूछा कि आप कुछ कहना चाहती हैं, तो उन्होंने कहा कि बेटी ने आपको जन्मदिन (11अक्टूबर) की शुभकामना देने के लिए संस्कृत में एक गीत तैयार किया है।

महानायक की अनुमति मिलने के बाद एंजेल ने अपने बेबाक अंदाज में गीत सुनाया,जिसे सुनकर अभिताभ बच्चन मुस्करा उठे। साईं सृजन परिवार ने भी इस एपिसोड के प्रसारण को अत्यंत उत्साह से देखा था और एंजेल की सफलता की दुआ की थी। शो में शानदार प्रदर्शन करने के बाद एंजेल का उनके घर पहुंचने पर कॉलोनीवासियों ने फूलमालाओं से स्वागत किया।

शिल्प शक्ति

दीपावली में दृष्टि दिव्यांगजनों के कौशल विकास व आत्मनिर्भरता की नई रोशनी

दीपावली, जो हर साल अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने का प्रतीक है, इस वर्ष दिव्यांगजनों के लिए एक नई दिशा और उम्मीद का संदेश लेकर आई है। दृष्टि दिव्यांगजनों के कौशल विकास और आर्थिक सशक्तिकरण के प्रयासों ने इस त्योहार को और भी खास बना दिया है। दिव्यांगजनों ने दीपावली के अवसर पर अपनी तैयार की गई मोमबत्तियाँ, दिये और अन्य उत्पादों को बेचकर न केवल अपनी क्षमता का परिचय दिया, बल्कि समाज में अपनी भूमिका को भी मजबूती दी है। इस पहल से उनके जीवन में रोशनी का एक नया अध्याय जुड़ा है, जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक अहम कदम है।

राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून के कौशल विकास और आर्थिक सशक्तिकरण विभाग ने दृष्टि दिव्यांगजनों और अन्य दिव्यांग व्यक्तियों के लिए जो पहल की है, वह न केवल उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है, बल्कि समाज में उनके योगदान को भी महत्वपूर्ण बना रही है। विशेषकर व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास के क्षेत्र में किए गए प्रयास सराहनीय हैं। संगठन ने 1950 में प्रौढ़ान्धों के लिए प्रौढ़ान्ध प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की थी, जो आज एक प्रभावी और उत्कृष्ट संस्था के रूप में सामने आ रहा है। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा दी जा रही प्रशिक्षण सुविधाएं, जो देहरादून और चेन्नई में स्थित हैं, दृष्टि दिव्यांगजनों को व्यावसायिक और सामाजिक जीवन में सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। प्रशिक्षण के दौरान दृष्टि दिव्यांगजनों को न केवल उनके पेशेवर कौशल को बढ़ाने का अवसर मिलता है, बल्कि उन्हें जीवन के अन्य पहलुओं जैसे ब्रेल, स्मार्टफोन ऑपरेशन, गृह प्रबंधन और सॉफ्ट स्किल्स की भी शिक्षा दी जाती है। इससे न केवल उनके आत्म–सम्मान में वृद्धि होती है, बल्कि वे समाज में अपने योगदान को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं।

इसमें एक और उल्लेखनीय पहल है, जो दिव्यांगजनों के उत्पादों को विपणन के माध्यम से उनके आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाता है। 2023–24 के दौरान दिव्यांगजन उत्पादों जैसे कि नर्सरी उत्पाद, दीपावली के दिये, मोमबत्तियाँ और अन्य हस्तनिर्मित वस्त्रों का विक्रय किया गया। यह न केवल उनके उत्पादों की बाजार में मांग को बढ़ाता है, बल्कि संस्थान के आंतरिक संचय में भी वृद्धि होती है। दीपावली जैसे विशेष अवसरों पर इन उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय ने दिव्यांगजनों के आत्मविश्वास को भी सशक्त किया है।

इस पहल का महत्व सिर्फ इसलिए नहीं है कि यह दृष्टि दिव्यांगजनों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है, बल्कि यह उन्हें समाज में अपने अधिकारों और सम्मान को प्राप्त करने का अवसर भी दे रहा है। आज, जब दिव्यांगजन समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयासरत हैं, ऐसे में इस तरह की पहलों की बेहद आवश्यकता है। संस्थान का यह प्रयास न केवल दिव्यांगजनों को कौशल सिखाने का है, बल्कि उन्हें समाज में समान अवसर प्रदान करने का भी है। यह सुनिश्चित करता है कि दिव्यांगजन न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाए, बल्कि समाज की मुख्यधारा में अपने अधिकारों का पालन करते हुए योगदान भी दे सकें।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

पुस्तक समीक्षा

'दर्द बोलता है'

ग़ज़ल संग्रह

(रचयिता- डॉ० राजेश कुमार जैन)

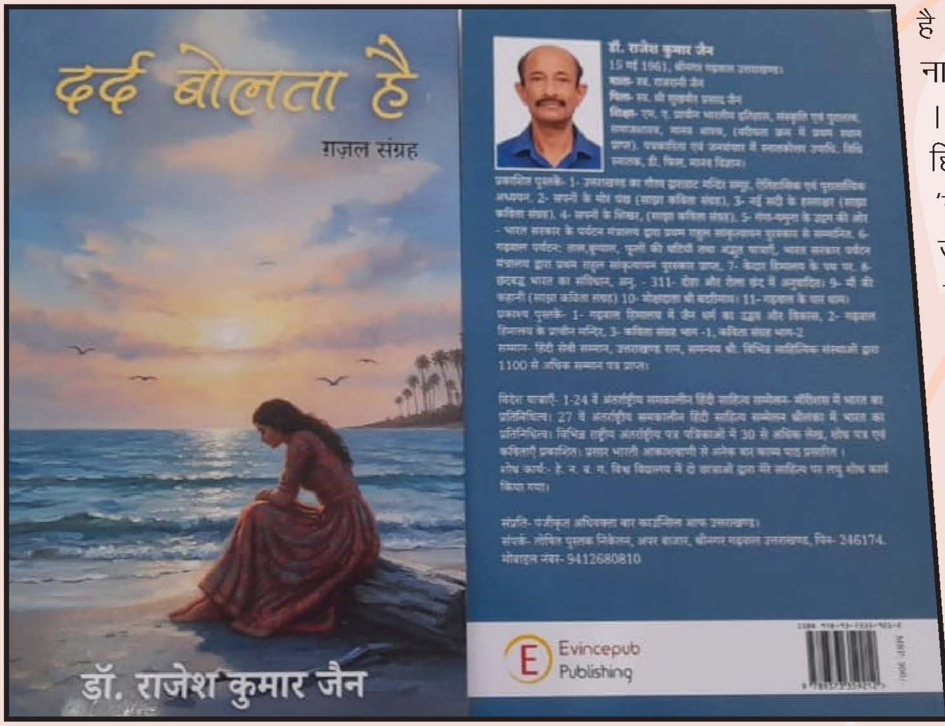

एक सुपरिचित नाम डॉ. राजेश कुमार जैन लोकप्रिय साहित्यकार, यायावर और घुमक्कड़ का रचना संसार अनेक विधाओं से सुशोभित है । अनेक विषयों में पारंगत समाज विज्ञानी,भाषाविद,समीक्षक, अत्यंत सहज और सरल स्वभाव के बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ. जैन की अभी तक 12 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । जिनमें चार साझा काव्य संग्रह हैं । डॉ. जैन की दो पुस्तकों– 'गंगा यमुना के उद्‌गम की ओर' तथा 'गढ़वाल पर्यटन : ताल, बुग्याल, फूलों की घटियाँ तथा अद्‌भुत यात्राएँ' को भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा दिए जाने वाले लेखन विधा के सर्वोच्च पुरस्कार प्रथम 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' से पुरस्कृत किया जा चुका है । इसके अतिरिक्त – 'उत्तराखण्ड का गौरव : द्वाराहाट मन्दिर समूह, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक अध्ययन', 'केदार हिमालय के पथ पर' और छंदबद्ध भारत के संविधान के अनुच्छेद – 311 का एक भाग दोहा और रोला छंद में डॉ. जैन द्वारा अनुवादित किया गया है। उनकी पुस्तक–'मोक्ष दाता श्री बदरीनाथ' को उत्तराखण्ड भाषा संस्थान द्वारा इसी वर्ष प्रकाशित किया गया है । उनके द्वारा लिखित 'गढ़वाल के चार धाम' नामक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है । उनकी आने वाली पुस्तकों में – 'गढ़वाल हिमालय में जैन धर्म का उद्‌भव और विकास' , 'गढ़वाल हिमालय के प्राचीन मन्दिर' और उनके पाँच कविता संग्रह प्रकाशित होने वाले हैं । डॉ. जैन 24 वें अंतर्राष्ट्रीय समकालीन हिंदी साहित्य सम्मेलन जो 17 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक 2002 में मॉरीशस में सम्पन्न हुआ था, और 27 वें अंतर्राष्ट्रीय समकालीन हिंदी साहित्य सम्मेलन जो 19 अगस्त से 27 अगस्त 2004 तक श्रीलंका में सम्पन्न हुआ था, में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्र – पत्रिकाओं में उनके 30 से अधिक लेख, शोध पत्र तथा कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं । प्रसार भारती आकाशवाणी से अनेक बार उनके काव्य पाठ प्रसारित हुए हैं । हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय की दो छात्राओं द्वारा डॉ. जैन के साहित्य पर लघु शोध कार्य किया गया है । वर्तमान में डॉ. जैन बार काउंसिल आफ उत्तराखण्ड के पंजीकृत अधिवक्ता हैं ।

उनकी प्रस्तुत पुस्तक – 'दर्द बोलता है', उनका पहला ग़ज़ल संग्रह है जिसमें उनकी शानदार चुनिंदा 181 ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं, ये ग़ज़ल संग्रह – 211 पृष्ठ का है, जो एविन्स पब्लिशिंग,बिलासपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित किया गया है । उन्होंने अपनी ग़ज़ल में उर्दू के जटिल और कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया है, मगर उनकी बहर, रदीफ और काफिया का निर्वाह सभी को जरूर प्रभावित करेगा । आश्चर्यजनक लाजवाब शेर दिल को छूकर झकझोर जाते हैं । डॉ. जैन ने ग़ज़ल की तमाम बंदिशों को अपनी ग़ज़लों में तहे – दिल से निभाया है । दिल को छू जाने वाले शेर यकीनन उनको यादों में बनाए रखने के लिए काफी हैं । उनकी ग़ज़लें पाठकों और श्रोताओं के दिलों में उतरती चली जाती है । उन्होंने जीवन की विसंगतियों को बखूबी अपनी ग़ज़लों में

निभाया है । उनकी एक ग़ज़ल की बानगी देखिए –

हमको तो हर दिन ही मरना पड़ता है
आँखों पर जब पर्दा करना पड़ता है ।
बड़ा बनकर भी यूँ जीना पड़ता है
अनसुना सा सबकुछ करना पड़ता है ।
खुद की बर्बादी का जश्न मनाता हूँ
दूर कहीं जाकर तब रोना पड़ता है।
खामोशी में जी लेता हूँ मैं अक्सर
समझौता जीवन में करना पड़ता है।
नहीं बात सुनता जब अपनी भी कोई
फिर उनको भी तो समझाना पड़ता है।
बच्चों की बातों को मानें हम कबतक
खुद को भी तो हमें मनाना पड़ता है।
नफरत की दुनिया में जिंदा रहने को
'राज' हमें जग से टकराना पड़ता है।

इसी तरह अपनी एक ग़ज़ल में वो बेबसों की मदद करने की बात कुछ इस अन्दाज में कहते हैं –

कोई तरकीब सुझाई जाए
जिन्दगी कैसे बिताई जाए।
साथ बेबस का दीजिए यारों
न हँसी गम की उड़ाई जाए ।
झूठ ना हो कोई भी जिसमें
प्यार की नगरी बसाई जाए।
बात बे बात पर लड़ना क्यों है
बात बिगड़ी है बनाई जाए।
रिश्तों की खातिर तो हमको
तिश्नगी सब ये मिटाई जाए।
जा रहे हैं सब घर छोड़कर
खौफ की धुंध हटाई जाए।
उलझनें सबकी ही मिट जाएँ
ऐसी तरकीब सुझाई जाए।

डॉ. जैन का कहना है कि कभी भी किसी का दिल मत दुखाओ और सभी की दुआएँ बटोरते चलो । इस पर एक ग़ज़ल देखिए–

असर हमने दुआओं का देखा
भाग्य लोगों का बदलता देखा ।
साथ देता रहा जो बेबस का
झूमता उसको तो सदा देखा ।
दिल दुखाते हैं जो गरीबों का
हश्र उनका यहाँ बुरा देखा ।
प्यार में है बहुत बड़ी ताकत
आज हमने भी आजमा देखा ।
लाख चाहो बुरा नहीं होता
तूफां से कश्ती को निकलता देखा ।
बात कहना वही जो सच हो
झूठ का महल उजड़ता देखा ।
जो खुशी छीन ले गया यारों
'राज' उनको लुटा हुआ देखा ।

आज सगे रिश्तों में भी प्यार और विश्वास जाने कहाँ खोता जा रहा है इन्हीं सब बातों को बयाँ करती छटपटाती उनकी एक ग़ज़ल देखिए –

लोग तो जीने लगे बस कमाने के लिए
याद आते हैं सभी रिश्ते बताने के लिए ।
ज़िन्दगी देखो सिमटती दिख रही कैसे यहाँ
तरसते दिखते चचा – ताऊ कहाने के लिए।
बीच आँगन के दीवारें हैं नजर आती यहाँ
रास्ता भी तंग है यूँ आने – जाने के लिए ।
छटपटाती यादें हैं मन चीखता अक्सर यहाँ
कितने अच्छे कच्चे घर थे प्यार पाने के लिए।
दौर कैसा आ गया है लोग तरसे हैं सभी
दौड़ के अपने सभी रिश्तों से मिलने के लिए।
बेरुखी क्यों ये बसा ली है सभी ने आजकल
नेकियाँ करता न कोई अब ज़माने के लिए।
'राज' हम अपने सभी शिकावे यहीं पे छोड़ दें
बन वजा हर शख्स की बस मुस्कुराने के लिए।

इसी प्रकार डॉ. राजेश कुमार जैन ने अपनी ग़ज़लों में लय, ताल और गति के साथ संवेदना, मानवीयता और मार्मिक हृदय स्पर्शी भावनाओं को व्यक्त करने में अद्‌भुत सफलता पाई है । उन्होंने बहुत सादगी और सच्चाई से अपनी बात कह कर पाठकों को अभिभूत करने में पूरी सफलता प्राप्त की है । उनका वाक्य चातुर्य और अद्‌भुत शब्द व्यंजना के कारण मैं उन्हें और उनकी कलम को दिल से सजदा करता हूँ । डॉ. राजेश कुमार जैन को उनके अद्‌भुत ग़ज़ल संग्रह 'दर्द बोलता है' के लिए एक बार फिर तहे दिल से मुबारकबाद देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार के उत्कृष्ट और सारगर्भित ग्रंथ लिखकर हिंदी साहित्य की श्री वृद्धि करेंगे।

साईं सृजन पटल की ओर से अनेकानेक शुभकामनाएं।

प्रस्तुति : प्रो.(डॉ.)के.एल.तलवाड़

लोक कला

कुमाऊँ की धरती की सांस्कृतिक पहचान-ऐपण

उत्तराखण्ड राज्य की लोककला, गायन शैली ,नृत्य शैली ,रीतिरिवाज या वाद्य शैली जैसी अनेक विधाओं में राज्य में एक विविधता मिलती देखने को मिलती है। इसी क्रम में यदि कुमाऊँ के क्षेत्र पर दृष्टिपात करें तो, यहां की लोककला एवं शिल्प कला के अन्तर्गत भित्ति चित्र , काष्ठ कला, डिकरे (मिट्टी से निर्मित शिव परिवार), तथा ऐपण व रंगवाली शामिल हैं। कुमाऊँ में अल्पना तथा भित्ति चित्रों का प्रत्यक्ष स्वरुप व चलन चन्द शासन काल से होता आया है जो आज भी अपनी पहचान बनाए है। कुमाऊं की धरती को सांस्कृतिक पहचान देने में ऐपण कला की एक विशिष्ट भूमिका है। ऐपण शब्द की उत्पत्ति 'अर्पण' शब्द से हुई है जिसका वास्तव में अर्थ 'लिखना या देना' है। ऐपण प्रत्येक त्योहार पर , धार्मिक अनुष्ठानों में , शुभ अवसरों पर, नामकरण संस्कार ,विवाह समारोह ,जनेऊ संस्कार और विशेष रूप से दीपावली के अवसर पर बनाये जाते हैं जोकि इन समारोहों का एक अभिन्न अंग है । ऐपण डिजाइन को घरों में बनाने के पीछे यह विश्वास है कि, यह जीवन में सकारात्मकता और समृद्धि लाते हैं। कुमाऊं के ऐपण कला की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न देवी देवता, प्रकृति, मातृ शक्ति, कुल देवी व कुलदेवता को मूर्त अथवा अमूर्त रूप में चित्रित किया जाता है। ऐपण कला को मुख्यतः चार वर्गों में बांटा गया है :–

1. चौकी : ये डिजाइन जमीन और चौकी पर बनाए जाते हैं। भिन्न–भिन्न अवसरों पर अलग–अलग चौकियां बनाई जाती हैं जैसे– लक्ष्मी चौकी, नामकरण चौकी, जनेऊ चौकी, वर चौकी, धुली अर्ग चौकी (द्वार पूजा के लिए) आदि।

2. पीठ : ये एक यंत्रीय आरेख होता है जिसका उद्देश्य देवता की स्थापना होता है। इन्हें भी चौकी या जमीन पर बनाया जाता है।

3. थापा : ऐपण की यह विधा भित्ति चित्रों के अन्तर्गत बनाई जाने वाली कला है, जिन्हें दीवार पर रंगों की सहायता से बनाया जाता है। इन्हें कागज पर बनाकर भी लगाया जाता है।

4. पट्टा : इन्हें मुख्य रूप से लाल और हरे रंग के प्रयोग द्वारा कागज पर बनाया जाता है, जैसे जन्माष्टमी का पट्टा, गंगा दशहरा का पट्टा, नागपंचमी का पट्टा आदि पारम्परिक ऐपण में आधार बनाने के लिए उसे गेरू से रंगा जाता है और इसके ऊपर पिसे चावल (जिसे बिस्वार कहा जाता है) से दाहिने हाथ की तीन अंगुलियों से डिजाइन बनाया जाता है। ऐपण की इन सभी विधाओं में प्रत्येक अवसर के अनुसार ही आलेखन किया जाता है। किसी में निश्चित संख्या में बिन्दुओं को जोड़ कर, कहीं रेखाओं को जोड़ कर, कहीं स्वास्तिक द्वारा तो कहीं इन सभी के मिश्रण द्वारा ऐपण बनाए जाते हैं। ऐपण को वास्तविक डिजाइन के साथ–साथ बेलबूटों आदि से सजाया जाता है। विशेष रूप से दीपावली के अवसर पर कुमाऊँ के प्रत्येक घरों में घर के बाहर से अंदर तक लक्ष्मी पद चिन्ह व चौकियां दिखाई देती हैं।

वर्तमान समय में घरों में टाइल्स व मार्बल लगने के कारण पारम्परिक ऐपण बनाना संभव नहीं होता है, इसीलिए इसका स्थान लाल व सफेद रंग के पेंट ने ले लिया है। आज ऐपण कला का प्रयोग अन्य रूपों में भी किया जाने लगा है जैसे – साड़ी में, वाल पेंटिंग, करवाचौथ के सामान, मेजपोश आदि। जिस कारण इसने महिलाओं को भी व्यावसायिक रूप से सशक्त किया है। यद्यपि आधुनिकीकरण किसी भी कला और संस्कृति के हस्तांतरण में सहयोगी होता है तथा उसे पुनर्जीवन प्रदान करता है परन्तु यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि इस दौड़ में उसके वास्तविक स्वरूप को जीवन्त रखा जाए।

प्रस्तुति
डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

सम्मान

अर्जुन अवार्डी डॉ. हर्षवंती बिष्ट को मिला केदार सिंह रावत पर्यावरण पुरस्कार

सी. पी. भट्ट पर्यावरण एवं विकास केंद्र द्वारा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ,गोपेश्वर, चमोली में आयोजित श्यामा देवी पर्यावरण व्याख्यान और केदार सिंह रावत सम्मान समारोह ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारे सामाजिक दायित्वों को एक बार फिर से उजागर किया। इस खास अवसर पर, देश की प्रसिद्ध पर्वतारोही और पर्यावरणविद डॉ. हर्षवंती बिष्ट को वर्ष 2025 का प्रतिष्ठित केदार सिंह रावत पर्यावरण पुरस्कार से नवाजा गया। डॉ. बिष्ट को यह पुरस्कार गंगोत्री और गोमुख क्षेत्र में भोज वनों के संरक्षण में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए प्रदान किया गया।

केदार घाटी में चिपको आंदोलन के नायक रहे स्व. केदार सिंह रावत की स्मृति में प्रतिवर्ष यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है और इस वर्ष का सम्मान डॉ. बिष्ट को उनकी पर्यावरणीय प्रतिबद्धता के लिए दिया गया। इस पुरस्कार के तहत उन्हें अंगवस्त्र, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और नगद राशि प्रदान की गई। डॉ.बिष्ट ने इस सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित छात्र–छात्राओं को प्रेरित किया कि वे स्थानीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य करें। महाविद्यालय के सभागार में आयोजित समारोह में अपने संबोधन में डॉ. हर्षवंती बिष्ट ने कहा कि उनका उद्देश्य न केवल हिमालयी पर्वतों पर चढ़ाई करना था, बल्कि वहां की जलवायु, जंगल और वनस्पतियों के संरक्षण के लिए भी कार्य करना था। उन्होंने बताया कि अनियोजित और अनियंत्रित पर्यटन के कारण हिमालयी क्षेत्रों में पर्यावरणीय संकट बढ़ रहा है और हमें प्रकृति से संतुलित और सहअस्तित्व की भावना के साथ जीने की आवश्यकता है। डॉ. बिष्ट ने छात्रों से अपील की कि वे पर्यावरणीय जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए इस धरती को संरक्षित रखें।

डॉ. बिष्ट ने इस दौरान स्लाइड शो के माध्यम से गंगोत्री क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और भोजवासा में उनके द्वारा किए गए वनस्पति संरक्षण कार्यों की प्रस्तुति भी दी। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.पी. नगवाल ने कहा कि डॉ. बिष्ट हम सभी शिक्षकों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उन्होंने पर्यावरण और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में किए गए उनके कार्यों को सराहा। इसी तरह, सी. पी. भट्ट पर्यावरण एवं विकास केंद्र के प्रबंध न्यासी ओम प्रकाश भट्ट ने केंद्र द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक और पर्यावरणीय अभियानों के बारे में बताया, इस दौरान कार्यक्रम की मुख्य अतिथि इंदिरा गाँधी वृक्ष मित्र पुरस्कार से सम्मानित बछेर की पूर्व सरपंच कलावती देवी ने चिपको की मातृ संस्था दशोली ग्राम स्वराज्य मण्डल के साथ पर्यावरण संवर्धन के कार्यों के अपने अनुभवों को साझा करते हुए पर्यावरणीय संवर्धन के कार्यों में महिलाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक, छात्र–छात्राएं और अन्य सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे। यह कार्यक्रम न केवल डॉ. हर्षवंती बिष्ट के योगदान को सम्मानित करने का अवसर था, बल्कि इसने यह भी याद दिलाया कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में छोटे–छोटे कदमों से बड़ी सफलता हासिल की जा सकती है। हमें अपनी संस्कृति के मूल संदेश 'वसुधैव कुटुंबकम' को आत्मसात करते हुए प्रकृति और मानवता के साथ संतुलन बनाए रखने की दिशा में प्रयासरत रहना चाहिए।

प्रस्तुतिः अंकित तिवारी,
उपसंपादक

सराहनीय पहल

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय क्षेत्रीय कार्यालय कर्णप्रयाग

दो दिवसीय निःशुल्क पुस्तक वितरण मेला

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) के क्षेत्रीय कार्यालय डॉ.शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग चमोली में 16 व 17 अक्टूबर को निःशुल्क पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.नवीन चन्द लोहनी एवं कुलसचिव खेमराज भट्ट से प्राप्त दिशा–निर्देशों के क्रम में छात्र हित में इस मेले का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि इस अध्ययन केंद्र सं. 17030 पर वार्षिक पद्धति की लगभग 2000 पुस्तकें स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर से संबंधित थी। इस कारण इनका उपयोग नहीं हो पा रहा था। यह पुस्तकें उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय और श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम से संबंधित थी। विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार इन पुस्तकों को उन जरूरतमंद छात्र–छात्राओं को निःशुल्क वितरित किया जाना था,जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.राम अवतार सिंह के संयोजकत्व तथा क्षेत्रीय कार्यालय कर्णप्रयाग के क्षेत्रीय निदेशक डॉ.आर.सी.भट्ट व सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रियंका लोहानी पाण्डेय के निर्देशन में महाविद्यालय स्टाफ के सहयोग से इस आयोजन को संपन्न किया गया। इस निःशुल्क पुस्तक वितरण मेले में स्नातक व स्नातकोत्तर एवं बी.एड. के छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस आयोजन में 455 विद्यार्थियों व 15 प्राध्यापकों ने अपना पंजीकरण करवाया। विद्यार्थियों को 1270 व अध्यापकों को 120 पुस्तकें यानि कुल 1390 पुस्तकें निःशुल्क वितरित की गई।

वितरित पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, राजनीति विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, दर्शनशास्त्र मनोविज्ञान, पर्यावरणीय विज्ञान, सांख्यिकी, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी,योगा,पत्रकारिता,फलित ज्योतिष, कर्मकांड व उद्यमिता आदि विषयों की थी।

साईं सृजन पटल के संयोजक और कर्णप्रयाग महाविद्यालय के पूर्व सेवानिवृत्त प्राचार्य ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की इस सराहनीय पहल की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। इस आयोजन के माध्यम से इन पुस्तकों की उपयोगिता सही मायनों में बढ़ी है।

प्रस्तुति : प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़